सब का सपना

निष्पक्ष व निडर - हिंदी दैनिक समाचार पत्र

रबी फसलों को पिलाएं संतुलित जल पेज: 7

इश्क दम और इडली रसम खाना, परिवार और भावनाओं पेज: 8

वर्ष : 02 | अंक : 51 | शनिवार 23 मई 2026 | अमरोहा (उत्तर प्रदेश) | www.sabkasapna.com | पृष्ठ : 08 | मूल्य: 2 रुपए

घुसपैठ पर अमित शाह का "जीरो टॉलरेंस": बीएसएफ को मिला आदेश, एक-एक घुसपैठिए की होगी पहचान

नई दिल्ली एजेंसी: केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सीमा पार घुसपैठ के प्रति शून्य-सहिष्णुता नीति की घोषणा की और बताया कि सरकार भारत की सीमाओं को सुरक्षित करने और सभी अवैध प्रवासियों को निर्वासित करने के लिए एक व्यापक स्मार्ट बॉर्डर परियोजना इसी वर्ष शुरू करेगी। दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के शपथ ग्रहण समारोह 2026 में बोलते हुए शाह ने कहा कि अवैध प्रवासन कृत्रिम जनसांख्यिकीय परिवर्तन लाने के उद्देश्य से रची गई एक सुनियोजित साजिश है। शाह ने इस बात पर जोर दिया कि देश की जनसांख्यिकी की रक्षा के लिए सरकार हर अवैध घुसपैठिए की पहचान करके उसे निर्वासित करने का इरादा रखती है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए

साइप्रस बना भारत का नया यूरोपीय रणनीतिक साथी, भूमध्यसागर में भारत की एंट्री होते ही टर्की की बढ़ी टेंशन

नई दिल्ली: भारत और सायप्रस के संबंधों ने एक नए ऐतिहासिक दौर में प्रवेश कर लिया है। सायप्रस के राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडौलिडेस की भारत यात्रा के दौरान दोनों देशों ने अपने द्विपक्षीयसंबंधों को औपचारिक रूप से सामरिक साझेदारी के स्तर तक पहुंचाने की घोषणा की। यह बदलते वैश्विक शक्ति संतुलन, यूरोप के साथ भारत की नई रणनीति, पूर्वी भूमध्यसागर की राजनीति और भारत की समुद्री तथा व्यापारिक महत्वाकांक्षाओं से जुड़ा एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त वक्तव्य में कहा कि भारत और सायप्रस की मित्रता केवल मजबूत ही नहीं बल्कि भविष्य उन्मुख भी है। लोकतंत्र, कानून के शासन, संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के प्रति साझा प्रतिबद्धता दोनों देशों की साझेदारी

का आधार है। प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया कि भारत सभी देशों की क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करता है और इसी कारण सायप्रस के प्रति उसका समर्थन लगातार मजबूत हुआ है। दरअसल भारत और सायप्रस की नजदीकी को तुर्की के संदर्भ में भी देखा जा रहा है। तुर्की लंबे समय से कश्मीर मुद्दे पर पाकिस्तान का खुला समर्थन करता रहा है और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत विरोधी रुख अपनाता रहा है। इसके जवाब में भारत ने पूर्वी भूमध्यसागर में तुर्की के प्रतिद्वंद्वी देशों सायप्रस और ग्रीस के साथ अपने संबंध तेजी से मजबूत किए हैं। भारत स्पष्ट रूप से सायप्रस गणराज्य की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का समर्थन करता है तथा उत्तरी सायप्रस में तुर्क समर्थित अलगाववादी शासन को मान्यता नहीं देता। इस प्रकार भारत और सायप्रस की सामरिक साझेदारी तुर्की को एक मजबूत कूटनीतिक संदेश भी मानी जा रही है। इस यात्रा के दौरान रक्षा

सायप्रस की मित्रता केवल मजबूत ही नहीं बल्कि भविष्य.....

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त वक्तव्य में कहा कि भारत और सायप्रस की मित्रता केवल मजबूत ही नहीं बल्कि भविष्य उन्मुख भी है। लोकतंत्र, कानून के शासन, संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के प्रति साझा प्रतिबद्धता दोनों देशों की साझेदारी का आधार है।

और सुरक्षा सहयोग पर विशेष जोर दिया गया। दोनों देशों ने आतंकवाद विरोधी संयुक्त कार्य समूह बनाने का समझौता किया। साथ ही 2026 से 2031 तक रक्षा सहयोग रोडमैप को भी अंतिम रूप दिया गया। समुद्री सुरक्षा, साइबर सुरक्षा और आतंकवाद विरोधी सहयोग को और मजबूत करने पर सहमति बनी। दोनों देशों ने सीमा पार आतंकवाद के खिलाफ साझा प्रतिबद्धता भी दोहराई। भारत और सायप्रस के बीच समुद्री सहयोग का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि सायप्रस भूमध्यसागर के अत्यंत महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग पर स्थित है। भारत ने इंडो पेसिफिक महासागर पहल में सायप्रस को शामिल किया है, जहां वह व्यापार संपर्क और समुद्री परिवहन क्षेत्र का सह अध्यक्ष बनेगा। इससे हिंद महासागर और भूमध्यसागर के बीच भारत की रणनीतिक पहुंच और मजबूत होगी। आर्थिक दृष्टि से भी यह साझेदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। सायप्रस भारत में निवेश करने वाले शीर्ष देशों में शामिल है। वर्ष 2000 से अब तक सायप्रस से भारत में लगभग 16 अरब डॉलर का निवेश आया है। सेवा क्षेत्र, सॉफ्टवेयर, दवा उद्योग, जहाजरानी और वाहन निर्माण जैसे क्षेत्रों में यह निवेश हुआ है। प्रधानमंत्री मोदी ने अगले पांच वर्षों में इस निवेश को दोगुना करने का लक्ष्य रखा है। भारत की गुजरात स्थित गिफ्ट सिटी को वैश्विक वित्तीय केंद्र बनाने में भी सायप्रस अहम भूमिका निभा सकता है। दोनों देशों के बीच पूंजी बाजार सहयोग समझौता हुआ है। सायप्रस की कंपनी एलिनास फाइनेंस गिफ्ट सिटी में सूचीबद्ध होने वाली पहली विदेशी कंपनी बन चुकी है। इसके अलावा अगले वर्ष से सायप्रस में भारतीय डिजिटल भुगतान व्यवस्था यूपीआई भी शुरू होगी।

पीएम मोदी की मंत्री परिषद् संग मैराथन बैठक, बोले- जीवन की सुगमता पर हुई सार्थक चर्चा

नई दिल्ली एजेंसी: अमेरिका, इजराइल और ईरान के बीच तनाव के कारण पश्चिम एशिया में बढ़ता संकट भारत को अपनी दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा रणनीति का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित करता प्रतीत होता है। तेल निर्यात करने वाले देशों से ईंधन आपूर्ति में भविष्य में संभावित व्यवधानों को लेकर चिंतित एनडीए सरकार ने ऊर्जा क्षेत्र में भारत की आत्मनिर्भरता को मजबूत करने के उद्देश्य से एक व्यापक रोडमैप तैयार करना शुरू कर दिया है। गुरुवार शाम को हुई केंद्रीय मंत्रिपरिषद की बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सौर ऊर्जा, बायोमास और बायोगैस जैसे वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों के विस्तार पर विशेष बल दिया। आयातित ईंधनों पर निर्भरता कम करने के महत्व पर जोर देते हुए,

प्रधानमंत्री ने मंत्रियों से आग्रह किया कि वे देश को वैश्विक भू-राजनीतिक झटकों से बचाने में सक्षम टिकाऊ और स्वदेशी ऊर्जा समाधानों को सक्रिय रूप से बढ़ावा दें। बैठक के दौरान, नरेंद्र मोदी ने 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र में बदलने के अपने सरकार के व्यापक दृष्टिकोण को भी दोहराया। उन्होंने कैबिनेट सहयोगियों को निर्देश दिया कि वे विकसित भारत के राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मिशन मोड में काम करना जारी रखें, साथ ही यह सुनिश्चित करें कि शासन आधुनिक अर्थव्यवस्था की बदलती जरूरतों के अनुरूप बना रहे। उच्च स्तरीय बैठक में हुई चर्चा मुख्य रूप से जीवन की सुगमता और व्यापार करने की सुगमता में सुधार लाने पर केंद्रित रही, जो सरकार के शासन एजेंडा के केंद्र में बने हुए हैं। प्रधानमंत्री ने खबरों के अनुसार, विकास की गति को और अधिक मजबूत करने के लिए सभी क्षेत्रों में त्वरित सुधारों का आह्वान किया। बैठक के एक दिन बाद, नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया पोस्ट में चचाओं का सारांश देते हुए कहा कि कल मंत्रिपरिषद की एक फलदायी बैठक हुई। हमने जीवन की सुगमता और व्यापार करने की सुगमता को बढ़ावा देने और विकसित भारत के हमारे साझा सपने को साकार करने के लिए आगे सुधार करने के संबंध में दृष्टिकोण और सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान किया। पेट्रोलियम और वित्त सहित प्रमुख मंत्रालयों ने बैठक के दौरान विस्तृत प्रस्तुतियाँ और क्षेत्रीय रोडमैप प्रस्तुत किए। प्रधानमंत्री ने पश्चिम एशिया में जारी अनिश्चितता के मद्देनजर घरेलू खाना पकाने के लिए

बर्खास्त सैनिकों को लेकर घिरे संजय सिंह-मनोज झा, भारतीय सेना ने खोली पूरी पोल

नई दिल्ली एजेंसी: भारतीय सेना ने मीडिया और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर वायरल हो रहे एक प्रेस कॉन्फ्रेंस वीडियो पर स्पष्टीकरण जारी किया है, जिसमें आरोप लगाया गया है कि फर्जी, दुर्भावनापूर्ण और भ्रामक बयानों के माध्यम से सेना की छवि को धूमिल करने का प्रयास किया जा रहा है। एक आधिकारिक बयान में, सेना ने कहा कि वीडियो में दिख रहे व्यक्ति - चंदू चव्हाण, हरेंद्र यादव और पी नरेंद्र - को अनुशासनहीनता और गैर-सैनिक आचरण के आधार पर सेवा से बर्खास्त कर दिया गया था, जबकि चौथा व्यक्ति, शंकर सिंह गुर्जर, नवंबर 2024 से भगोड़ा है, जिसके खिलाफ सैन्य और नागरिक दोनों अदालतों में अनुशासनात्मक

कार्यवाही चल रही है। एक्स पर साझा किए गए बयान में कहा गया है कि बयान प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में संजय सिंह और मनोज झा द्वारा संबोधित भ्रामक संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस के संबंध में, जहां तीन पूर्व सैनिकों और एक भगोड़े को मंच दिया गया था, तथ्यों को रिकॉर्ड पर रखना आवश्यक है। इन चारों व्यक्तियों के बारे में सच्चाई इस प्रकार है: चंदू चव्हाण - अनुशासनहीनता के लिए पांच बार लाल स्याही लगने के बाद 25 जुलाई 2024 को सेना से बर्खास्त। हरेंद्र यादव - अनुशासनहीनता के आधार पर 27 जनवरी 2024 को सेवा से बर्खास्त। शंकर सिंह गुर्जर - नवंबर 2024 से सेना से भगोड़ा। पी. नरेंद्र - अनुशासनहीनता के कारण सेवा से बर्खास्त। बयान में आगे बताया गया है कि ये व्यक्ति अब सेवा शर्तों के बारे में झूठी बातें फैला रहे हैं, सशस्त्र बलों के भीतर फूट डालने और अधिकारी-सैनिकों के बीच विभाजन पैदा करने का प्रयास कर रहे हैं। यह पूरी कवायद उनके अपने गैर-सैनिक आचरण और उनके खिलाफ चल रही कई कार्रवाइयों से ध्यान हटाने के उद्देश्य से की गई प्रतीत होती है, जबकि रेगिस्तान, नशे, अवज्ञा और संबंधित दुर्व्यवहार के कारण हुई उनकी बर्खास्तगी को झूठे तरीके से उत्पीड़न के रूप में चित्रित किया जा रहा है। यह स्पष्टीकरण आम आदमी पार्टी के सांसद संजय सिंह और आरजेडी सांसद मनोज झा द्वारा आयोजित संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस के बाद आया, जहां कथित तौर पर चारों पूर्व सैनिक मौजूद थे।

बकरीद पर कुबार्नी तो कामाख्या में बलि... गाय की राजनीति पर नीतीश कुमार की पार्टी ने दिया कौन सा संदेश?

नई दिल्ली एजेंसी: उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा सार्वजनिक स्थानों पर नमाज पढ़ने को लेकर दिए गए बयान के बाद एक नई बहस छिड़ गई है। वहीं दिल्ली सरकार ने बृहस्पतिवार को अधिकारियों को राष्ट्रीय राजधानी में अवैध पशु वध, अनधिकृत पशु व्यापार और पशुओं के प्रति क्रूरता के खिलाफ कार्रवाई तेज करने का निर्देश दिया। कलकत्ता हाई कोर्ट ने बृहस्पतिवार को पश्चिम बंगाल सरकार को अगले सप्ताह मनाए जाने वाले ईद उल अजहा के मद्देनजर मांगी गई छूट के संबंध में पश्चिम बंगाल पशु वध नियंत्रण अधिनियम, 1950 की धारा 12 के अनुसार निर्णय लेने का निर्देश दिया। दूसरी तरफ नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल यूनाइटेड (जदयू) के मुख्य प्रवक्ता नीरज कुमार ने हाल ही में एक निजी मीडिया से बातचीत में स्पष्ट किया कि आज के बदलते दौर में गाय को राजनीतिक नफा-नुकसान का जरिया नहीं बनाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि गाय को राष्ट्रीय पशु का दर्जा दिया जाए या नहीं, यह पूरी

तरह से केंद्र सरकार के अधिकार क्षेत्र का मामला है, लेकिन इसमें कोई दोराय नहीं है कि गाय हमेशा से सभी के लिए गहरे आदर और सम्मान का प्रतीक रही है। त्योहारों और धार्मिक परंपराओं पर अपनी राय रखते हुए जेडीयू नेता ने कहा कि यदि बकरीद के मौके पर कुबार्नी दी जाती है, तो दूसरी तरफ मां कामाख्या के पावन दरबार में भी बलि चढ़ाने की सनातन परंपरा रही है। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि अगर कोई इस मामले में 'राजनीतिक बलि' की बात कर रहा है, तो वह विषय बिल्कुल अलग है। नीरज कुमार ने इस बात पर जोर दिया कि हमारा संविधान देश के हर नागरिक को अपनी बात खुलकर रखने और अपनी धार्मिक मान्यताओं का पालन करने का पूरा अधिकार देता है। कई मुस्लिम धर्मगुरुओं ने कहा है कि ईद-उल-अजहा की नमाज पहले की तरह इस बार भी मस्जिदों और ईदगाहों में ही अदा की जाएगी। जरूरत पड़ने पर अलग-अलग पालियों में नमाज की व्यवस्था भी की जा सकती है। ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड (एआईएमपीएलबी) के वरिष्ठ कार्यकारिणी सदस्य मौलाना खालिद रशीद फरंगी महली ने कहा कि 28 मई को होने वाली ईद-उल-अजहा के लिए प्रत्येक वर्ष की तरह इस बार भी मस्जिदों और ईदगाहों में व्यापक तैयारियां की जा रही हैं।

कॉकरोच जनता पार्टी' के स्पोर्ट में उतरे शशि थरूर, बोले-यह पाकिस्तानी साजिश नहीं, भारतीय युवाओं का गुस्सा है

नई दिल्ली एजेंसी: कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और तिरुवनंतपुरम से सांसद शशि थरूर ने हाल ही में चर्चा में आई सोशल मीडिया मुहिम 'कॉकरोच जनता पार्टी' का पुरजोर बचाव किया है। शुक्रवार को उन्होंने इस आंदोलन को पाकिस्तानी साजिश बताने वाले दावों को सिरे से खारिज करते हुए इसे "बेहद बचकाना और सीधा-साधा" तर्क करार दिया। थरूर ने जोर देकर कहा कि इस मुहिम से जुड़ने वाले अधिकांश लोग भारतीय युवा हैं, न कि विदेशी। मुहिम के संस्थापक अभिजीत दिपके के दावों का हवाला देते हुए शशि थरूर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' (एक्स) पर एक विस्तृत पोस्ट साझा की। उन्होंने बताया कि इस आंदोलन के लगभग 94% फॉलोअर्स भारत में ही मौजूद हैं। थरूर के अनुसार, यह आंकड़ा साफ तौर पर दशार्ता है कि यह आंदोलन देश के युवाओं के बीच वास्तविक जनभावना और उनके भीतर पनप रहे असंतोष को बयां करता है। प्रेशर कुकर के वाल्व की तरह है व्यंग्य शशि थरूर ने लोकतांत्रिक मूल्यों की वकालत करते हुए कहा कि लोकतंत्र में व्यंग्य या असहमति की आवाजों को दबाया नहीं जाना चाहिए, भले ही उनका रूप थोड़ा उकसाने वाला ही क्यों न हो। शशि थरूर ने अपना बयान देते हुए कहा कि "सच्चाई जो भी हो (और शायद इंस्टाग्राम को इस पर स्थिति साफ करनी चाहिए), मेरा मानना है कि लोकतंत्र में ऐसी आवाजों को दबाना मूर्खता है। लोकतंत्र की सबसे बड़ी खूबी यही है कि यह जनता की भावनाओं, हताशा और शिकायतों को बाहर निकालने का मंच देता है। किसी व्यंग्यात्मक पेज पर इस गुस्से को बाहर आने देना वास्तव में 'राष्ट्रहित' में है।"

सरकारी कर्मचारियों की मैनुअल एसीआर खत्म, अब डिजिटल प्रणाली से होगी निगरानी

चंडीगढ़ एजेंसी: 22 मई को जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, हरियाणा सरकार ने संशोधित वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट (एसीआर) ढांचे के साथ-साथ डिजिटल प्रदर्शन निगरानी प्रणाली शुरू करके सरकारी कर्मचारियों के मूल्यांकन और कामकाज में सुधार के प्रयास शुरू कर दिए हैं। मुख्य सचिव अनुराग रस्तोगी ने सभी प्रशासनिक सचिवों, विभागों के प्रमुखों, बोर्डों और निगमों, विश्वविद्यालयों और जिला प्रशासनों को पारंपरिक एसीआर प्रक्रिया से पूरी तरह से डिजिटल प्रारूप में परिवर्तित होने का निर्देश दिया है। नई प्रणाली के तहत, विभाग-विशिष्ट एसीआर प्रारूपों में कर्मचारियों के कार्य, उपलब्धियों और प्रदर्शन को मापने योग्य और परिणाम-उन्मुख तरीके से दर्ज किया जाएगा, जिससे वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन को बढ़ावा मिलेगा। विज्ञप्ति में यह बताया गया है। सरकार ने विभागों से उन अधिकारियों और कर्मचारियों की सूची प्रस्तुत करने का अनुरोध किया

है जिनके एसीआर की संख्या सबसे अधिक लंबित है, ताकि लंबित कार्यों को निपटाया जा सके और समय पर मूल्यांकन के माध्यम से जवाबदेही बढ़ाई जा सके। मैनुअल एसीआर प्रणाली को अप्रैल 2027 तक पूरी तरह बंद कर दिया जाएगा और सभी मूल्यांकन ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से किए जाएंगे। एनआईसी या किसी नामित तकनीकी टीम द्वारा विकसित किया जाने वाला यह प्लेटफॉर्म कर्मचारियों के कार्य प्रदर्शन और उपलब्धियों को सीधे एसीआर प्रणाली से जोड़ेगा। यह तंत्र एचआरएमएस पोर्टल के साथ एकीकृत होगा ताकि कर्मचारियों के कार्य का वास्तविक समय में मूल्यांकन किया जा सके।

इसके अतिरिक्त, मुख्य सचिव की वेबसाइट पर एक विशेष 'सम्मान बोर्ड' बनाया जाएगा, जिसमें निर्धारित मापदंडों के अनुसार कर्मचारियों की प्रदर्शन-आधारित रैंकिंग प्रदर्शित की जाएगी। यह प्रणाली राज्य, जिला और ब्लॉक स्तर पर संचालित होगी और उच्च और निम्न प्रदर्शन करने वाले दोनों कर्मचारियों की रैंकिंग प्रदर्शित करेगी।

सरकार ने नीट में सेंध की बात मानी, एनटीए प्रमुख कहते हैं 'कोई लीक नहीं', क्या किसी को पता है कि आखिर हुआ क्या?

नई दिल्ली एजेंसी: एक वाक्य ऐसा है जिसे नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) शायद नीट से जुड़े ताजा विवाद का आधिकारिक निष्कर्ष बनाना चाहेगी। 21 मई को एक संसदीय समिति के सामने पेश होते हुए, एनटीए के डायरेक्टर जनरल (डीजी) अभिषेक सिंह ने कथित तौर पर कहा कि नीट-यूजी 2026 का पेपर "सिस्टम के जरिए लीक नहीं हुआ था"। कागज पर, यह एक मजबूत बचाव जैसा लगता है। लेकिन दिक्कत यह है कि घटनाओं के बारे में सरकार का अपना पक्ष बहुत अलग लगता है। कुछ ही दिन पहले, केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया था कि नीट पेपर लीक मामले में "कमांड की श्रृंखला (कमान शृंखला) में सेंध लगी थी" और कहा था कि सरकार इसकी ज़िम्मेदारी ले रही है। हमने इसकी रिपोर्ट यहाँ की थी। और यहीं पर वह विरोधाभास सामने आता है जिसे नजरअंदाज करना नामुमकिन है। एक ऐसा बचाव जिसने और भी बड़े सवाल खड़े कर दिए यह एक सीधा-सा तर्क है। अगर कमांड की श्रृंखला में सेंध लगी थी, तो एनटीए प्रमुख आखिर कहना क्या चाह रहे हैं जब वे इस बात पर जोर देते हैं कि पेपर "सिस्टम के जरिए" लीक नहीं हुआ था? छात्रों और अभिभावकों के लिए, यह अंतर स्पष्टता से ज्यादा, शब्दों के

सावधानीपूर्वक इस्तेमाल जैसा लगता है। आखिरकार, "सिस्टम" सिर्फ. किसी दफ़्तर की इमारत के अंदर रखा एक कंप्यूटर सर्वर नहीं है; इसमें (सिस्टम में) इस पैमाने की परीक्षा आयोजित करने में शामिल हर स्तर शामिल होता है। छपाई, पैकेजिंग, परिवहन और सुरक्षा से लेकर, निगरानी, समन्वय, सुरक्षा और देखरेख तक। अगर पेपर उस श्रृंखला में कहीं भी बाहर निकल गया, तो ज्यादातर लोग इसे फिर भी सिस्टम की विफलता ही कहेंगे। और सच कहूँ तो, वे गलत नहीं होंगे। छात्र तकनीकी बारीकियों पर बहस नहीं

21 मई को एक संसदीय समिति के सामने पेश होते हुए, एनटीए के डायरेक्टर जनरल (डीजी) अभिषेक सिंह ने कथित तौर पर कहा कि नीट-यूजी 2026 का पेपर 'सिस्टम के जरिए लीक नहीं हुआ था'।

कर रहे हैं यही बात नीट को लेकर मौजूदा संदेश को इतना भ्रमित करने वाला बनाती है। एक तरफ, केंद्र सरकार ने एक ऐसी सेंध को स्वीकार किया है जो राष्ट्रीय आक्रोश, सीबीआई जाँच और कई राज्यों में गिरफ्तारियों को जन्म देने के लिए काफी गंभीर थी। दूसरी तरफ, परीक्षा आयोजित करने वाली एजेंसी इस बात को साबित करने पर ज्यादा ध्यान देती दिख रही है कि लीक उसके आंतरिक डिजिटल बुनियादी ढाँचे से शुरू नहीं हुआ था। यह प्रशासनिक रूप से मददगार हो सकता है। लेकिन यह जनता का भरोसा बहाल करने में बहुत कम मदद करता है, क्योंकि छात्र तकनीकी बारीकियों पर बहस नहीं कर रहे हैं। एक किशोर जो नीट की तैयारी में दो साल लगाता है, उसे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि लीक छपाई, परिवहन या वितरण के दौरान हुआ था। जिन माता-पिता ने कोचिंग क्लास के लिए अपनी बचत के खाते खाली कर दिए, वे रुककर यह नहीं कहेंगे कि, "कम से कम सेंध सर्वर से तो नहीं लगी।" छात्रों के लिए उलझन सीधी-सी है। अगर सरकार ने पहले ही मान लिया है कि सेंध लगी थी, तो एनटीए अभी भी इसे 'लीक' मानने से इनकार क्यों कर रहा है? पेपर बाहर कैसे आया? कोई भी इसकी ज़िम्मेदारी क्यों नहीं लेना चाहता? जब तक इन सवालों के जवाब नहीं मिल जाते, तब तक तो नुकसान हो ही चुका है। सीबीआई की जाँच से एनटीए की स्थिति समझाना और भी मुश्किल हो जाता है एनटीए प्रमुख का बचाव और भी ज्यादा हैरान करने वाला इसलिए है, क्योंकि सीबीआई की जाँच खुद ही कथित पेपर लीक के आधार पर आगे बढ़ रही है।

संपादकीय

लू से हलकान जिंदगी

हाल के दिनों में आसमान से बरसती आग से देश में जन-जीवन बुरी तरह झुलस रहा है। रोज तापमान बढ़ने के नये रिकॉर्ड सामने आ रहे हैं। ये असहनीय तापमान केवल स्वास्थ्य की चुनौती मात्र नहीं है, बल्कि एक आर्थिक संकट भी है। देश में असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिक भीषण गर्मी में काम करने को मजबूर हैं। यदि वे ऐसा न करें तो उनके सामने आजीविका का संकट पैदा हो जाता है। स्कूल-कालेज तो लू के दौरान बंद किए जा सकते हैं, सरकारी व गैर सरकारी दफ्तरों में काम के घंटों में बदलाव किया जा सकता है, लेकिन खेत में काम करने वाले खेतिहर मजदूर व निर्माण कार्य में लगे श्रमिकों को तो तपती दोपहरी व लू के बीच काम करने को मजबूर होना पड़ता है। दरअसल, लू की मार जहां शारीरिक है, वहीं आर्थिक भी। लगातार बढ़ते तापमान से लोगों की आजीविका और श्रम उत्पादकता पर बुरा असर पड़ रहा है। इस संकट को हाल के दिनों में हुई ईंधन की कीमतों की वृद्धि और महंगाई ने और बढ़ा दिया है। लोगों को सीमित संसाधनों में जीवन यापन को मजबूर होना पड़ रहा है। विडंबना यह है कि इस संकट का सबसे घातक प्रभाव उस तबके को सहन करना पड़ता है जो ह्यरोज कुंआ खोदकर पानी पीनेह्न को बाध्य है। एक दिन की कमाई से ही रात को उसके घर का चूल्हा जलता है। लू के निशाने पर वे अनौपचारिक श्रमिक हैं जो भारतीय आर्थिकी की रीढ़ है। सही मायनों में लू के खिलाफ लड़ाई को अब केवल एक मौसमी सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या ही नहीं माना जा सकता है। धीरे-धीरे यह एक गंभीर आर्थिक चुनौती भी बनी है। अनेक अंतर्राष्ट्रीय संगठन इस बाबत चेताते रहे हैं। वर्ष 2024 में अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने अनुमान लगाया था कि लू से उपजे हालात से भारत को सौ अरब डॉलर का नुकसान हुआ था। इससे पहले वर्ष 2022 में विश्व बैंक ने चेतावनी दी थी कि भारत का तीन-चौथाई श्रमिक वर्ग लू से प्रभावित क्षेत्रों में काम करने को मजबूर है। अनुमान है कि लू के तनाव के कारण होने वाली विश्वव्यापी नौकरियों की कमी में भारत की हिस्सेदारी आधी हो सकती है। दरअसल, भारत में सबसे अधिक जोखिम वाले समूहों में निर्माण श्रमिक, खेतिहर श्रमिक, किसान, स्ट्रीट वेंडर और डिलीवरी एजेंट शामिल हैं। हालांकि, समय-समय पर केंद्र व राज्य सरकारों ने कार्य समय का पुनर्निर्धारण, छायादार विश्राम क्षेत्र बनाने, जलपान सुविधा, सुरक्षात्मक कपड़े और स्वास्थ्य निगरानी को लेकर एडवाइजरी जारी की है,लेकिन फिर भी संकट के दायरे को देखते हुए ये उपाय नाकाफी हैं। देखा जाए तो फिलहाल भारत में गर्मी के संकट से मुकाबले के लिये बनायी गई योजनाएं काफी हद तक अस्थायी रूप से राहत देने वाली हैं। वक्त की मांग है कि भीषण गर्मी वाले महीनों के लिये तत्काल व्यापक नीतिगत ढांचा तैयार किया जाए।

चिंतन-मनन

संकल्प और साहस

खेल की कक्षा शुरू हुई तो एक दुबली-पतली अपंग लड़की किसी तरह अपनी जगह से उठी। वह खेलों के प्रति जिज्ञासा प्रकट करते हुए शिक्षक से ओलिंपिक रेकॉर्ड्स के बारे में सवाल पूछने लगी। इस पर सभी छात्र हंस पड़े। शिक्षक ने भी व्यंग्य किया- तुम खेलों के बारे में जानकर क्या करोगी। अपने ऊपर कभी नजर डाली है? तुम तो ठीक से खड़ी भी नहीं हो सकती, फिर ओलिंपिक से तुम्हें क्या मतलब है? तुम्हें कौन सा खेलना है जो यह सब जानोगी। चुपचाप बैठकर सुनो।

रुआंसी लड़की कुछ कह न सकी। सारी क्लास उस पर हंसती रही। अगले दिन जब खेल पीरियड में उसे बाकी बच्चों से अलग बिठाया गया तो उसने कुछ सोचकर बैसाखियां संभालीं और दृढ़ निश्चय के साथ बोली-सर याद रखिएगा। अगर लगन सच्ची हो और इरादे बुलंद हों तो सब कुछ संभव है। आप देखना एक दिन यही लड़की हवा से बातें करके दिखाएगी। उसकी इस बात से भी ठहाका गूंज उठा। सबने इसे मजाक के रूप में लिया। लेकिन वह लड़की तेज चलने के अभ्यास में जुट गई। वह अच्छी और पौष्टिक खुराक लेने लगी, फिर वह कुछ दिनों में दौड़ने भी लगी। कुछ दिनों के बाद उसने छोटी-मोटी दौड़ में भाग लेना भी शुरू कर दिया। उसे दौड़ते देख लोग दांतों तले उंगली दबा लेते थे। फिर कई लोग उसकी मदद को आगे आए। सबने उसका उत्साह बढ़ाया। उसके हौसले बुलंद होने लगे। फिर उसने 1960 के ओलिंपिक में हिस्सा लिया और तीन स्वर्ण पदक जीतकर सबको हतप्रभ कर दिया। ओलिंपिक में इतिहास रचने वाली वह थी अमेरिकी धाविका विल्मा रुडोल्फ।

आवश्यकता है

आवश्यकता है दैनिक सब का सपना समाचार पत्र को उत्तर प्रदेश के समस्त जिलों में ब्लॉक स्तर, तहसील स्तर व जिला स्तर पर संवाददाताओं की इच्छुक अभ्यर्थी संपर्क करें या व्हाट्सएप करें।

9456884327/8218179552

1975 का आक्रोश और 2026 का बेचैन भारत?

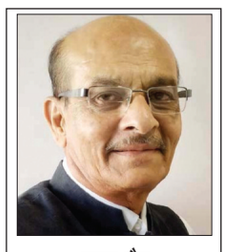

सनत जैन

भारत के लोकतांत्रिक इतिहास में 1975 केवल एक वर्ष नहीं, बल्कि सत्ता, आर्थिक संकट और जनाक्रोश के टकराव का प्रतीक भी है। 2026 में देश की परिस्थितियों को देखकर बार-बार 1975 की मंहगाई का वही प्रश्न उठता है, क्या भारत फिर किसी बड़े राजनीतिक और सामाजिक विस्फोट की ओर बढ़ रहा है? जिसमें सत्ता का परिवर्तन भी हुआ था। 1971 के युद्ध में भारत ने पाकिस्तान को पराजित कर स्वतंत्र राष्ट्र के तौर पर बांग्लादेश का निर्माण कराया था। करीब एक करोड़ शरणार्थियों का बोझ भारत ने उठाया। पाकिस्तानी सेना के 95000 से अधिक जवान आत्मसमर्पण कर भारत में रहे। युद्ध के बाद अमेरिका और पश्चिमी देशों के प्रतिबंध ने तेल संकट और आर्थिक प्रतिबंधों ने भारतीय अर्थव्यवस्था की कमर तोड़ दी थी। पेट्रोल, डीजल और खाद्यान्न की कमी ने महंगाई को विस्फोटक बना दिया। इंदिरा गांधी 1971 का युद्ध जीतकर ह्लदुर्गाह्न कहलायीं, लेकिन 1974 आते-आते जनता की नजर में वही इंदिरा गांधी की सरकार महंगाई और बेरोजगारी की प्रतीक बन गई। इलाहाबाद हाईकोर्ट द्वारा इंदिरा गांधी का चुनाव अवैध घोषित किया गया, इसने आंदोलन की आग में घी डालने और आंदोलन को उग्र किया। छात्र, कर्मचारी, ट्रेड यूनियन और विपक्ष एक मंच पर आ गए। जयप्रकाश नारायण ने व्यवस्था परिवर्तन का नारा दिया। रेलवे हड़ताल से लेकर विश्वविद्यालयों के छात्र आंदोलनों तक से देश उबाल पर था। जेपी ने पुलिस और सेना को सरकार के आदेश नहीं मानने का आव्हान किया। जब सरकार को लगा कि आंदोलन नियंत्रित करना संभव नहीं है, सत्ता हाथ से निकल सकती है, तब 25 जून 1975 को सरकार ने आपातकाल लागू कर दिया। लोकतंत्र को कुचलने की वह कीमत अंततः कांग्रेस को 1977 के चुनाव में चुकानी पड़ी। उत्तर भारत में कांग्रेस की करारी पराजय हुई। आज का भारत भले तकनीकी रूप से आधुनिक हो। आर्थिक और सामाजिक बेचैनी 1975 जैसी खतरनाक स्तर तक बढ़ती हुई दिख रही है। रुपया लगातार गिर रहा है। 97 के स्तर पर पंहुच गया है। महंगाई आम आदमी की कमर तोड़ रही है, आयात बढ़ गया है। विदेशी मुद्रा का संकट है। युवाओं में बेरोजगारी को लेकर गुस्सा बढ़ रहा है। करोड़ों डिग्रीधारी युवा प्रतियोगी परीक्षाओं के पेपर लीक, भर्ती घोटालों और अस्थायी रोजगार से त्रस्त हैं। जिन युवाओं को अच्छे दिन, करोड़ों युवाओं को हर साल नौकरी देने और ह्लविश्वगुरु भारतह्न का सपना दिखाया गया था। वही युवा वर्ग आज नौकरी और भविष्य की सुरक्षा के लिए संघर्ष कर रहे हैं। सरकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह है, जनता का भरोसा वर्तमान सरकार से तेजी से कमजोर पड़ता दिख रहा है। किसान आंदोलनों, अग्निवीर योजना के विरोध, पेपर लीक, आरक्षण विवाद और मतदाता सूची से नाम काटे जाने भ्रष्टाचार जैसे आरोपों ने लोकतांत्रिक संस्थाओं पर सवाल खड़े हो रहे हैं। न्यायपालिका को लेकर असंतोष और अविश्वास बढ़ा है। हाल में बेरोजगार युवाओं को लेकर मुख्य न्यायाधीश की कथित टिप्पणी ने युवाओं के आक्रोश को और हवा दी है। जब जनता को यह महसूस होने लगे, सत्ता, प्रशासन और न्याय तीनों उसकी पीड़ा को नहीं सुन रहे हैं, तब व्यवस्था के प्रति अविश्वास खतरनाक मोड़ पर पंहुच जाता है। मंहगाई, बेरोजगारी और कर्ज के कारण आम आदमी का जीवन मुश्किल हो गया है। श्रीलंका, बांग्लादेश और नेपाल में युवाओं का उग्र असंतोष सत्ता परिवर्तन का कारण बना है। भारत में भी सोशल मीडिया के दौर में नाराजगी अधिक तेजी से फैल रही है। फर्क सिर्फ इतना है कि भारत का आकार और सोच कहीं अधिक बड़ी है। यदि आर्थिक संकट, बेरोजगारी, कर्ज और राजनीतिक, धार्मिक ध्रुवीकरण इसी तरह बढ़ते रहे, तो सामाजिक परिवर्तन की दशा में 1975 से ज्यादा गंभीर परिणाम देखने को मिल सकते हैं। इतिहास का सबसे बड़ा सबक यही है कि लोकतंत्र केवल चुनाव जीतने से नहीं चलता। जब जनता की थाली महंगी हो, जेब खाली हो और भविष्य अंधकारमय लगे, तब सबसे शक्तिशाली सरकार का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। 1975 में सत्ता ने असहमति को दबाने का रास्ता चुना था। 2026 के भारत में सत्ता के सामने यही चुनौती है। वर्तमान सरकार लोकतंत्र में पूंजीवादी व्यवस्था के स्थान पर समाजवादी व्यवस्था जिसमें समाज के सभी कमजोर वर्ग को राहत मिले। यह रास्ता चुनेगी या एक बार फिर इतिहास खुद को दोहराने की कोशिश करेगा।

जातिगत जनगणना पर सुप्रीम कोर्ट की ऐतिहासिक मुहर

किशन सनमुखदास

चुनौती याचिका 20 मई 2026 को खारिज-संवैधानिक वैधता, सामाजिक न्याय और भारत की नई नीति- व्यवस्था की दिशा का व्यापक समग्र विश्लेषण...

भारत की जनगणना 2027 डिजिटल इंडिया और डेटा-आधारित गवर्नेंस के सबसे बड़े प्रशासनिक अभियानों में से एक माना जा रहा है.

सुप्रीम कोर्ट का 20 मई 2026 का यह फैसला केवल एक याचिका खारिज करने तक सीमित नहीं है।बल्कि भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था, सामाजिक न्याय की अवधारणा और डेटा- आधारित शासन प्रणाली के भविष्य को दिशा देने वाला निर्णय.

वैश्विक स्तरपर भारत में वर्षों से चल रही जातिगत जनगणना की बहस को बुधवार 20 मई 2026 को एक निर्णायक मोड़ तब मिला, जब भारतीय सुप्रीमकोर्ट ने जातिगत जनगणना के खिलाफ दायर जनहित याचिका को खारिज कर दिया। इस फैसले ने केवल एक कानूनी विवाद का अंत नहीं किया,बल्कि यह स्पष्ट संदेश भी दे दिया कि भारत में होने वाली जनगणना 2027 पूरी तरह संवैधानिक,कानूनी और नीतिगत अधिकारों केदायरे में संचालित की जा रही है। बता दें इसके पूर्व भी सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार (11 अप्रैल, 2026) को केंद्र को जाति जनगणना रोकने का निर्देश देने वाली याचिका को खारिज कर दियाथा और जनहित याचिका में इस्तेमाल की गई भाषा के लिए याचिकाकर्ता की कड़ी आलोचना की। पिछले कुछ महीनों से जातिगत जनगणना को लेकर राजनीतिक, सामाजिक और वैचारिक स्तर पर तीखी बहस चल रही थी। कुछ वर्ग इसे सामाजिक न्याय का आधार बता रहे थे, जबकि विरोधी पक्ष इसे सामाजिक विभाजन बढ़ाने वाला कदम कह रहा था। किंतु सर्वोच्च अदालत के ताजा निर्णय ने यह स्थापित कर दिया कि किसी भी लोकतांत्रिक सरकार को यह अधिकार है कि वह देश की सामाजिक संरचना, विशेषकर पिछड़े वर्गों की वास्तविक संख्या और स्थिति को समझने के लिए डेटा एकत्र करे, ताकि उसके आधार पर कल्याणकारी योजनाएं बनाई जा सकें। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि भारत की जनगणना 2027 केवल एक पारंपरिक जनगणना नहीं मानी जा रही,बल्कि इसे डिजिटल इंडिया और डेटा-आधारित गवर्नेंस के सबसे बड़े प्रशासनिक अभियानों में से एक माना जा रहा है। लगभग डेढ़ सौ वर्षों से चली आ रही जनगणना व्यवस्था अब तकनीकी रूप से आधुनिक स्वरूप में प्रवेश कर चुकी है।

साथियों इस बार की जनगणना दो बड़े चरणों में आयोजित की जा रही है।पहला चरण 1 अप्रैल 2026 से प्रारंभ हुआ,जिसमें हाउस लिस्टिंग और आवासीय गणना की प्रक्रिया अपनाई गई। 16 अप्रैल से 15 मई 2026 तक चले इस चरण में देशभर के घरों,संपत्तियों,भवनों, आवासीय सुविधाओं, जल स्त्रोतों, बिजली, इंटरनेट, शौचालय, रसोई, वाहन और सामाजिक- आर्थिक आधारभूत संरचनाओं से संबंधित डेटा संकलित किया गया।यह चरण केवल जनसंख्या गिनने तक सीमित नहीं था, बल्कि यह देश की जीवन- स्थितियों का व्यापक सामाजिक -आर्थिक सर्वेक्षण भी बन गया।जनगणना का दूसरा चरण वर्ष 2027 में प्रारंभ होगा, जिसमें प्रत्येक परिवार और उसके सदस्यों की विस्तृत व्यक्तिगत जानकारी दर्ज की जाएगी। इसमें आयु, शिक्षा, रोजगार, भाषा, वैवाहिक स्थिति, प्रवासन, सामाजिक श्रेणी और विशेष रूप से जातिगत विवरण शामिल होंगे। पहली बार इतनी व्यापक डिजिटल प्रणाली अपनाई जा रही है जिसमें मोबाइल ऐप, टैबलेट आधारित डेटा एंट्री, ऑनलाइन सत्यापन और केंद्रीकृत डेटा मॉनिटरिंग जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है।सरकार का उद्देश्य केवल आंकड़े जुटाना नहीं, बल्कि डेटा आधारित नीति निर्माण को मजबूत करना है। यही कारण है कि जातिगत आंकड़ों को अब सामाजिक न्याय और संसाधन वितरण के दृष्टिकोण से सटीक रूप से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। साथियों, सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने सुनवाई के दौरान स्पष्ट कहा कि जातिगत जनगणना करना या न करना सरकार का नीतिगत अधिकार है।अदालत ने कहाकि जब तक कोई नीति संविधान या कानून का उल्लंघन नहीं करती, तब तक न्यायपालिका उसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकती। अदालत की यह टिप्पणी भारतीय लोकतंत्र में शक्तियों के पृथक्करण के सिद्धांत को भी मजबूती देती है, जहां नीति निर्माण कार्यपालिका का क्षेत्र माना जाता है और न्यायपालिका केवल वैधानिकता की समीक्षा करती है। मुख्य न्यायाधीश ने सुनवाई के दौरान महत्वपूर्ण टिप्पणी करते हुए कहा कि सरकार के लिए यह जानना जरूरी है कि देश में अन्य पिछड़ा वर्ग और सामाजिक रूप से वंचित समूहों की वास्तविक संख्या कितनी है,ताकिउनके लिए उपयुक्त कल्याणकारी योजनाएं बनाई जा सकें।अदालत ने अपने आदेश में कहा कि जाति आधारित गणना अपने आप में असंवैधानिक नहीं है।यदि सरकार सामाजिक और आर्थिक नीतियों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए आंकड़े जुटाना चाहती है, तो यह उसका वैध प्रशासनिक अधिकार है। अदालत ने यह भी कहा कि किसी नीति के संभावित दुरुपयोग की आशंका मात्र से उसे रोका नहीं जा सकता। यह टिप्पणी इसलिए महत्वपूर्ण मानी जा रही है क्योंकि याचिकाकर्ता का मुख्य तर्क यही था कि जातिगत आंकड़ों का राजनीतिक और सामाजिक दुरुपयोग हो सकता है। याचिकाकर्ता ने यह भी कहा कि सरकार के पास पहले से ही पर्याप्त सामाजिक डेटा उपलब्ध है, इसलिए अलग से जातिगत गणना की आवश्यकता नहीं है। किंतु अदालत ने इस तर्क को स्वीकार नहीं किया और कहा कि सरकार को समकालीन और प्रमाणिक आंकड़ों की आवश्यकता होती है, क्योंकि पुराने डेटा के आधार पर प्रभावी नीति निर्माण सटीक रूप से संभव नहीं है।

साथियों, यह फैसला सामाजिक न्याय की राजनीति और प्रशासनिक नीति दोनों के लिए ऐतिहासिक माना जा रहा है। भारत में लंबे समय से यह बहस चलती रही है कि आरक्षण, कल्याणकारी योजनाओं और सामाजिक प्रतिनिधित्व का वास्तविक आधार क्या होना चाहिए। अनेक विशेषज्ञों का मानना रहा है कि बिना अद्यतन जातिगत आंकड़ों के सामाजिक न्याय की नीतियां अधूरी रहती हैं। स्वतंत्र भारत में 1931 के बाद व्यापक स्तर पर जातिगत आंकड़े उपलब्ध नहीं रहे, जिसके कारण पिछड़े वर्गों की वास्तविक संख्या और उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को लेकर लगातार विवाद बना रहा। ऐसे में जनगणना 2027 को एक ऐतिहासिक अवसर के रूप में देखा जा रहा है, जो देश की सामाजिक संरचना का वास्तविक चित्र सामने ला सकती है।

साथियों, राजनीतिक दृष्टि से भी यह मुद्दा अत्यंत महत्वपूर्ण बन चुका है। कई राज्यों में जातिगत सर्वेक्षण और सामाजिक गणना पहले ही राजनीतिक विमर्श का केंद्र बन चुके हैं। बिहार, कर्नाटक और अन्य राज्यों में किए गए जातीय सर्वेक्षणों ने राष्ट्रीय स्तर पर बहस को और तेज किया। केंद्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर जातिगत जनगणना की दिशा में आगे बढ़ना इस बात का संकेत माना जा रहा है कि भविष्य की नीतियां अधिक डेटा-आधारित और लक्ष्य केंद्रित होंगी। इससे यह भी संभावना बढ़ेगी कि सामाजिक योजनाओं में संसाधनों का वितरण वास्तविक जनसंख्या अनुपात और जरूरतों के आधार पर किया जा सके।

साथियों, सुप्रीम कोर्ट ने इससे पहले 11 अप्रैल 2026 को भी ऐसी ही एक याचिका को खारिज किया था, जिसमें केंद्र सरकार को जातिगत जनगणना रोकने का निर्देश देने की मांग की गई थी। उस समय अदालत ने याचिका में प्रयुक्त भाषा पर भी कड़ी टिप्पणी की थी। अदालत का यह लगातार रुख स्पष्ट करता है कि वह जनगणना जैसे प्रशासनिक और नीतिगत विषयों में अनावश्यक न्यायिक हस्तक्षेप से बचना चाहती है। इससे यह संदेश भी गया है कि लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में नीति निर्माण की प्राथमिक जिम्मेदारी निर्वाचित सरकारों की होती है।जातिगत जनगणना के समर्थकों का तर्क है कि भारत जैसे बहुस्तरीय सामाजिक ढांचे वाले देश में समान अवसर और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए वास्तविक आंकड़े अत्यंत आवश्यक हैं। यदि सरकार को यह ज्ञात ही नहीं होगा कि किस समुदाय की आबादी कितनी है, उनकी शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिति कैसी है, तो योजनाओं का सही लक्ष्य निर्धारण संभव नहीं होगा। यही कारण है कि अदालत ने भी सरकार की इस आवश्यकता को स्वीकार किया कि पिछड़े वर्गों की संख्या और स्थिति जानना शासन व्यवस्था के लिए आवश्यक है।दूसरी ओर, विरोधियों की आशंका यह रही है कि जातिगत पहचान को फिर से केंद्र में लाने से सामाजिक ध्रुवीकरण बढ़ सकता है। उनका मानना है कि आधुनिक भारत को जाति से ऊपर उठकर आर्थिक और मानव विकास के आधार पर आगे बढ़ना चाहिए।

राजनीति सनातन विरोध की बजाय आममुद्दों पर केंद्रित हो

भारतीय राजनीति के वर्तमान परिदृश्य में एक ऐसा विमर्श लगातार उभर रहा है, जिसने राजनीतिक बहस को विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक न्याय जैसे मूल प्रश्नों से हटाकर धार्मिक पहचान और आस्था के इर्द-गिर्द खड़ा कर दिया है। यह विमर्श है-सनातन समर्थन बनाम सनातन विरोध। आज देश में एक ओर सनातन संस्कृति को भारतीय जीवन का शाश्वत आधार मानने वाली शक्तियां हैं, तो दूसरी ओर कुछ राजनीतिक वक्तव्य और प्रवृत्तियां ऐसी दिखती हैं जिन्हें जनमानस सनातन विरोध के रूप में देखता है। प्रश्न यह नहीं कि किसी विचारधारा से सहमति या असहमति क्यों है, बल्कि प्रश्न यह है कि क्या राजनीति का केंद्र धर्म होना चाहिए या जनजीवन के वास्तविक मुद्दे? भारत का लोकतंत्र धर्मनिरपेक्ष संविधान पर आधारित है, जहां राज्य का कार्य किसी धर्म का पक्ष या विरोध नहीं, बल्कि सभी नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना है। राजनीतिक दलों का दायित्व भी यही होना चाहिए कि वे जनता की समस्याओं, विकास और राष्ट्रीय एकता को प्राथमिकता दें। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में धार्मिक विमर्श राजनीति का बड़ा केंद्र बन गया है।

सनातन केवल एक धार्मिक शब्द नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता की सांस्कृतिक चेतना, जीवन-दर्शन और मूल्य परंपरा का प्रतीक है। ह्लसत्यं वद, धर्मं चरह्न, ह्लवसुधैव कुटुम्बकम्ह्न, ह्लसर्वे भवन्तु सुखिनःह्न जैसे सूत्र इसी सनातन दृष्टि के अंग हैं। इसलिए जब कोई राजनीतिक वक्तव्य सनातन को लेकर अपमानजनक या आक्रामक भाषा का उपयोग करता है, तो उसका प्रभाव केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और भावनात्मक स्तर पर भी पड़ता है। तमिलनाडु में द्रमुक नेता उदयनिधि स्टालिन द्वारा सनातन धर्म की तुलना बीमारी से करने वाला वक्तव्य इसी कारण व्यापक विवाद का कारण बना। विपक्ष के अनेक दलों ने उससे दूरी बनाने का प्रयास किया, क्योंकि यह स्पष्ट था कि भारत जैसे देश में करोड़ों लोगों की आस्था को आहत करने वाला कथन राजनीतिक रूप से भी असहज स्थिति उत्पन्न करेगा। यहां यह समझना आवश्यक है कि द्रविड़ आंदोलन की अपनी ऐतिहासिक और सामाजिक पृष्ठभूमि रही है। उसका मूल संघर्ष सामाजिक विषमताओं और जातीय वर्चस्व के विरुद्ध था। लेकिन जब सामाजिक सुधार का विमर्श पूरे धर्म या संस्कृति के विरोध जैसा प्रतीत होने लगे, तब वह जनस्वीकृति खो देता है।

यह भी सत्य है कि अनेक विपक्षी दल स्वयं को सनातन विरोधी नहीं, बल्कि सामाजिक कुरीतियों, जातिवाद और भेदभाव के विरोधी बताते हैं। उनका तर्क है कि वे सामाजिक न्याय और संवैधानिक मूल्यों की बात करते हैं। यह दृष्टि लोकतंत्र में स्वीकार्य है, क्योंकि हर परंपरा में आत्मसमीक्षा और सुधार की आवश्यकता होती है। स्वयं भारतीय दर्शन में भी संवाद, बहस और आत्मचिंतन की परंपरा रही है। बुद्ध, महावीर, कबीर, नानक, दयानंद और गांधी-सभी ने समाज की विसंगतियों पर प्रश्न उठाए, लेकिन उन्होंने समाज को तोड़ने नहीं, सुधारने का मार्ग चुना। समस्या तब उत्पन्न होती है जब राजनीतिक भाषा संतुलन खो देती है। जब आलोचना सुधार की जगह अस्वीकार की भाषा बन जाती है, तब वह समाज में ध्रुवीकरण को जन्म देती है। भारत जैसे बहुलतावादी देश में यह प्रवृत्ति लोकतांत्रिक स्वास्थ्य के लिए उचित नहीं कही जा सकती।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले एक दशक में भारतीय राजनीति में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और हिंदुत्व का विमर्श अधिक प्रभावी होकर उभरा है। राम मंदिर निर्माण, काशी विश्वनाथ कॉरिडोर, महाकाल लोक, सांस्कृतिक धरोहरों के पुनरुत्थान जैसे विषयों ने एक बड़े वर्ग में सांस्कृतिक आत्मविश्वास को मजबूत किया है। इससे भारतीय जनता पार्टी को राजनीतिक लाभ भी मिला। दूसरी ओर विपक्षी दल इस बदलते राजनीतिक मानस को समझने में कई बार असहज दिखाई दिए। कहीं उन्होंने धर्मनिरपेक्षता और आस्था के बीच संतुलन बनाने में चूक की, तो कहीं उनके कुछ नेताओं के बयान उन्हें कठिन स्थिति में ले आए। उत्तर प्रदेश से लेकर पश्चिम बंगाल तक चुनावी राजनीति में यह देखा गया कि केवल जातीय समीकरण या पारंपरिक वोट बैंक अब पर्याप्त नहीं हैं। जनता सांस्कृतिक पहचान, विकास और राष्ट्रीय विमर्श को भी महत्व देने लगी है। ऐसे में यदि कोई दल हिंदू आस्था के प्रति असंवेदनशील दिखता है, तो उसका राजनीतिक प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। लेकिन इस पूरे विमर्श का दूसरा पक्ष भी है। क्या राजनीति का उद्देश्य केवल धार्मिक पहचान के आधार पर समर्थन जुटाना होना चाहिए? क्या देश के सामने मौजूद बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, कृषि संकट, आर्थिक असमानता और सामाजिक विघटन जैसे प्रश्न पीछे छूट जाने चाहिए? यह चिंता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

भारतीय राजनीति में पिछले कुछ वर्षों के दौरान धर्म, विशेषकर सनातन और हिंदू आस्था को लेकर कांग्रेस, सपा, बसपा, तृणमूल कांग्रेस, द्रमूक आदि विपक्षी दलों एवं उनके कुछ नेताओं द्वारा दिए गए बयानों को व्यापक जनसमुदाय ने सनातन पर आक्षेप या हिंदू भावनाओं के प्रति असंवेदनशीलता के रूप में देखा, जिसके राजनीतिक प्रभाव भी दिखाई दिए। किंतु इस विषय को केवल ह्लहिंदू विरोधह्न बनाम ह्लराजनीतिक विरोधह्न के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा। भारत एक लोकतांत्रिक और बहुलतावादी राष्ट्र है, जहां किसी भी राजनीतिक दल को सरकार, नीतियों या नेतृत्व का विरोध करने का अधिकार है, लेकिन यदि वह विरोध आस्था, संस्कृति और बहुसंख्यक समाज की भावनाओं से टकराता हुआ प्रतीत हो, तो उसका राजनीतिक मूल्य चुकाना पड़ सकता है। यही कारण है कि कई दलों के लिए यह धारणा चुनौती बनी कि वे सत्ता-विरोध की राजनीति करते-करते सांस्कृतिक और धार्मिक संवेदनाओं से दूर हो गए हैं। भारत में सनातन केवल धार्मिक पहचान नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन, परंपरा, संस्कृति, सहिष्णुता और सभ्यता का प्रतीक माना जाता है, इसलिए उसके प्रति असावधान भाषा या नकारात्मक संकेत जनमानस में प्रतिकूल प्रतिक्रिया उत्पन्न करते रहे हैं। दूसरी ओर लोकतंत्र की स्वस्थ परंपरा यह भी अपेक्षा करती है कि राजनीतिक विमर्श व्यक्तियों, नीतियों और शासन के मुद्दों पर केंद्रित रहे, न कि धार्मिक ध्रुवीकरण पर। राजनीतिक दलों के लिए यह आवश्यक है कि वे मतभेद रखें, आलोचना करें, लेकिन भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना, धार्मिक संवेदनशीलता और आस्था के सम्मान का संतुलन बनाए रखें, क्योंकि जनता अंततः उसी नेतृत्व को स्वीकार करती है जो उसकी भावनाओं, परंपराओं और राष्ट्रीय मानस को समझने का प्रयास करता है।

भारत की राजनीति को ह्लधर्म बनाम धर्महह्न की लड़ाई से ऊपर उठकर ह्लजन बनाम जनसमस्याह्न के विमर्श की ओर बढ़ना होगा। राजनीतिक दलों को यह समझना होगा कि जनता मंदिर भी चाहती है और रोजगार भी, आस्था भी चाहती है और अवसर भी, संस्कृति भी चाहती है और आधुनिकता भी। केवल धार्मिक ध्रुवीकरण किसी राष्ट्र की स्थायी प्रगति का आधार नहीं बन सकता। आज आवश्यकता है कि राजनीतिक दल सनातन विरोध या हिंदू विरोध जैसे आरोप-प्रत्यारोपों की राजनीति से बाहर निकलें। यदि किसी परंपरा में सुधार की बात करनी है, तो वह सम्मानजनक भाषा और रचनात्मक दृष्टि से हो। सामाजिक न्याय का अर्थ सांस्कृतिक अस्वीकार नहीं होना चाहिए और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का अर्थ अन्य दृष्टियों का निषेध भी नहीं होना चाहिए। भारतीय सभ्यता की शक्ति उसकी विविधता और सहिष्णुता रही है। यहां शंकराचार्य भी हैं, बुद्ध भी हैं, महावीर भी हैं, कबीर भी हैं, वेद भी हैं और संविधान भी। भारत ने सदैव संवाद को संघर्ष से ऊपर रखा है। इसलिए राजनीति का भी दायित्व है कि वह समाज को जोड़ने वाली भाषा बोले। आज जब विश्व संघर्षों, सांस्कृतिक तनावों और पहचान की राजनीति से जूझ रहा है, तब भारत के पास ह्लवसुधैव कुटुम्बकम्ह्न का संदेश है। यही सनातन का वास्तविक स्वरूप भी है-समावेश, करुणा और सहअस्तित्व।

राजनीतिक दलों को आत्ममंथन करना होगा कि वे जनता को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं-धार्मिक टकराव की ओर या राष्ट्रीय निर्माण की ओर? यदि राजनीति केवल आस्था के विवादों में उलझी रही, तो जनजीवन के वास्तविक प्रश्न पीछे छूट जाएंगे। लेकिन यदि राजनीति संस्कृति का सम्मान करते हुए विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक समरसता को केंद्र बनाएगी, तो भारत एक संतुलित और सशक्त राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ेगा। सनातन का अर्थ शाश्वत है, और शाश्वत वही होता है जो सबको साथ लेकर चले। इसलिए किसी भी प्रकार का अंध-विरोध या अंध-समर्थन समाधान नहीं हो सकता। आवश्यकता है विवेकपूर्ण दृष्टि, संतुलित राजनीति और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने की। भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता इसी में है कि वह आस्था का सम्मान करे, लेकिन राजनीति को जनहित का माध्यम बनाए। तभी लोकतंत्र भी मजबूत होगा और समाज भी समरस बनेगा।

यातायात नियम तोड़ने वालों पर अमरोहा पुलिस सख्त, एक दिन में 580 चालान

अमरोहा (सब का सपना):- पुलिस अधीक्षक लखन सिंह यादव के निर्देशन में गुरुवार को यातायात पुलिस ने जनपद के विभिन्न स्थानों पर सघन चेकिंग अभियान चलाया। अभियान में यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों पर कड़ी कार्रवाई की गई। यातायात पुलिस ने पटाखों जैसी तेज आवाज करने वाले मोडिफाइड साइलेंसर, मानक के विरुद्ध नंबर प्लेट, तीन सवारी, बिना हेलमेट तथा वाहनों पर जातिसूचक शब्द लिखकर चलने वाले वाहन चालकों के खिलाफ कार्रवाई की। मोटर वाहन अधिनियम के अंतर्गत कुल 580 वाहनों के चालान किए गए। शहर के चौराहों व तिराहों से अतिक्रमण भी हटवाया गया। गजरौला क्षेत्र में सड़क किनारे नो-हाईवे 09 पर बिना पार्किंग खड़े वाहनों व बिना नंबर प्लेट की ई-रिक्शा के विरुद्ध विशेष अभियान चलाया गया। मॉडिफाई और बिना नंबर प्लेट वाले वाहनों पर भी कार्रवाई हुई।

यातायात में नियुक्त पुलिसकर्मियों को गर्मी से बचाव के लिए ओआरएस एवं इलेक्ट्रॉल का वितरण भी किया गया। एसपी लखन सिंह यादव ने कहा कि यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों पर कार्रवाई लगातार जारी रहेगी। आमजन से अपील है कि नियमों का पालन करें और सुरक्षित यात्रा करें।

जिलाधिकारी ने किया सीएचसी गजरौला का निरीक्षण

अमरोहा (सब का सपना):- जिलाधिकारी डॉ0 नितिन गौड़ द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र गजरौला का स्थलीय निरीक्षण किया गया। जिलाधिकारी द्वारा अस्पताल के निरीक्षण के समय चिकित्सालय की ओ०पी०डी० सेवायें, एन०बी० एस०यू०, आई०पी०डी०, फामेर्सी, औषधि वितरण कक्ष, लैबर रूम एवं नर्सिंग स्टाफ का भी निरीक्षण किया गया। स्वास्थ्य केन्द्र परिसर में नगर पालिका परिषद द्वारा बनवाए जा रहे महिला पिंक शौचालय का भी निरीक्षण किया। निमार्णाधीन पिंक शौचालयों के सम्बन्ध में उन्होनें अधिशासी अधिकारी न0पा0प0 गजरौला को निर्देश दिये कि यहां जो 05 सीट का शौचालय बनाये जा रहे है उसके स्थान पर 05 शौचालयो के स्थान पर 04 शौचालयो का निर्माण कराये और 01 स्नानघर को निर्माण कराये ताकि मरीज के साथ रूकने वाले तीमारदारो को स्नान करने की सुविधा हो। इसके बाद उन्होनें परिसर में संचालित दीदी प्रेरणा कैन्टीन संचालक को निर्देश दिये कि जो डस्टबिन रखे है वह ढके होने चाहिये। जिलाधिकारी ने परिसर में एक महिला जो अपने बच्चे की दवा लेने आयी उनका पर्चा देखकर अस्पताल से मिली दवाईयों का मिलान किया और उससे जानकारी ली की डॉक्टर ने यह दवाईयां कैसे लेने को बताई है। बच्चे को कमजोर देखकर जिलाधिकारी ने उस बच्चो को एन0आर0सी0 में भर्ती करने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने सीएचसी परिसर में नगर पालिका परिषद को निर्देश दिये कि स्वास्थ्य केन्द्र परिसर में फन्डामेंटल पौधो के गमले रखवाये जैसे-मनी प्लान्टस आदि ताकि सुन्दरता के साथ मरीजो को अच्छी अनुभूति प्राप्त हो सके। उन्होनें स्वास्थ्य केन्द्र प्रभारी को निर्देश दिये कि खिड़कियो पर पर्दे लगे होने चाहिये और अच्छी प्रकार साफ-सफाई होनी चाहिये। डॉ० नितिन गौड़ द्वारा ओ०पी०डी० के अन्य कक्षों का निरीक्षण किया इसके बाद जिलाधिकारी द्वारा महिला जनरल वार्ड का निरीक्षण किया गया तथा नर्सिंग स्टाफ एवं वार्ड ब्वॉय को और ज्यादा सफाई व्यवस्था रखने एवं फुट ऑपरेटेड डस्टबिन का उपयोग करने के निर्देश दिये। इसी के साथ उन्होनें सम्बन्धित को निर्देश दिये कि वार्ड में कूलर की व्यवस्था की जाये। जिलाधिकारी ने स्वास्थ्य केन्द्र के डॉक्टर्स को निर्देश दिये अपनी-अपनी आई0डी0 बैज अवश्य लगी हो जिस पर आपका नाम और पदनाम लिखा हो। इसके उपरान्त जिलाधिकारी डॉ० नितिन गौड़ द्वारा सी०एम०एस०डी० स्टोर का निरीक्षण कर उपलब्ध ई०डी०एल० दवाईयों की जानकारी फार्मासिस्ट से ली। उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य केन्द्र पर पर्याप्त मात्रा में दवाईयां उपलब्ध है। उसके बाद उन्होंने एंटी रेबीज और एंटी वेनम के इंजेक्शन की उपलब्धता के बारे में जानकारी ली। जिस पर फार्मासिस्ट द्वारा पर्याप्त मात्रा में उक्त इंजेक्शन उपलब्ध होने के बारे में जानकारी दी।

जिलाधिकारी ने एंटी रेबीज और एंटी वेनम के इन्जेक्शन के फ्रिज का तापमान 13 डिग्री से0 होने पर सम्बन्धित को निर्देश दिये कि फ्रिज को टेक्निशियन द्वार ठीक करा ले ताकि एंटी रेबीज और एंटी वेनम इन्जेक्शन खराब न हो। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 योगेन्द्र सिंह, उप जिलाधिकारी, धनौरा, अधिशासी अधिकारी न0पा0प0, आदि सहित केन्द्र प्रभारी और डॉक्टर्स उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी ने किया जल जीवन मिशन के अन्तर्गत पेयजल योजना का किया स्थलीय निरीक्षण

अमरोहा (सब का सपना):- जिलाधिकारी डॉ0 नितिन गौड़ द्वारा ग्राम जलालपुर मुलकटा में जल जीवन मिशन के अंतर्गत हर घर जल योजना का स्थलीय निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान कार्य की गुणवत्ता, तकनीकी मानकों, स्वचालन पैनल, क्लोरीन पम्प और समयबद्धता की गहन समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने निरीक्षण के दौरान पाइपलाइन बिछाने के कार्य तथा गांव में नल से जल आपूर्ति की स्थायी व्यवस्था, हाउस होल्ड कनेक्शन, बोरिंग के कार्य करने आदि की जानकारी अधिशासी अभियन्ता जलनिगम से ली। अधिशासी अभियन्ता जल निगम चन्द्रहास द्वारा जिलाधिकारी को जानकारी दी कि उक्त टंकी से ग्राम जलालपुर कलां, ग्राम जलालपुर मुलकट और ग्राम निपनिया 03 ग्रामो में लगभग 175 किलोमीटर के एरिया में जल सप्लाई को कवर किया जाता है और प्रतिदिन सुबह-शाम को सप्लाई की जाती है। जिलाधिकारी ने सम्बन्धित को निर्देश दिये कि ग्रामों में शुद्ध एवं क्लोरीन युक्त पेयजल की आपूर्ति उपलब्ध हो और ग्रामीणों को स्वच्छ एवं निर्बाध जल आपूर्ति सुनिश्चित किये जाये। निरीक्षण के दौरान अधिशासी अभियंता जल निगम ग्रामीण इं. चंद्रहास, सहायक अभियंता, फर्म के परियोजना प्रबंधक, ग्राम प्रधान, संस्था के डीपीएम एवं संबंधित उपस्थित रहे।

ज्येष्ठ गंगा दशहरा के दृष्टिगत जिला मजिस्ट्रेट डॉ. नितिन गौड़ और पुलिस अधीक्षक ने किया निरीक्षण

अमरोहा (सब का सपना):- जिला मजिस्ट्रेट डॉ. नितिन गौड़ और पुलिस अधीक्षक लखन सिंह यादव ने ज्येष्ठ गंगा दशहरा के दृष्टिगत ब्रजघाट पहुंचकर आज गंगा घाटों और आसपास के क्षेत्रों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान दोनों अधिकारियों ने गंगा तट पर साफ-सफाई, भीड़ प्रबंधन, नावों की व्यवस्था, विद्युत व्यवस्था और सुरक्षा के इंतजामों का जायजा लिया। डॉ. नितिन गौड़ ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि गंगा दशहरा पर आने वाले श्रद्धालुओं को कोई असुविधा न हो। उन्होंने कहा इस पावन अवसर पर श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि गंगा घाटों पर पर्याप्त पुलिस बल तैनात किया गया है। वाहन पार्किंग, ट्रैफिक व्यवस्था की पूरी तैयारियां की गई हैं। साथ ही, किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना को रोकने के लिए सख्त निगरानी रखी जाएगी। इस अवसर पर उप जिलाधिकारी धनौरा शैलेश कुमार दुबे, पुलिस क्षेत्राधिकारी अंजलि कटारिया शैट सम्बंधित पुलिस अधिकारी उपस्थित रहे।

डीएम ने की बकरीद की तैयारियों को लेकर शांति समिति की बैठक

अमरोहा (सब का सपना):- जिला मजिस्ट्रेट डॉ0 नितिन गौड़ एवं अपर पुलिस अधीक्षक अखिलेश भदौरिया की उपस्थिति में कलेक्ट्रेट स्थित सभागार में आगामी ईद-उल-अजहा/ बकरीद के पर्व के दृष्टिगत शांति समिति की बैठक की गयी। इस अवसर पर जिलाधिकारी द्वारा समस्त तहसील से आए संभ्रांत नागरिकों से उनकी समस्या और सुझाव प्राप्त करते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। डॉ0 नितिन गौड़ ने कहा कि आपसी सौहार्द को बनाये रखते हुये पर्व को मनायें। यह क्षेत्र हमेशा से अमन और आपसी भाईचारा व गंगा जमुनी तहजीब की मिसाल रहा है। अगर कहीं पर कोई समस्या या विवाद है तो जिला प्रशासन और पुलिस को अवगत कराएं। समय रहते ही समस्या का उचित निस्तारण किया जाएगा। उन्होने सोशल मीडिया को लेकर कहा कि बिना सोचे समझे संदेश को फारवर्ड न करें। उन्होंने समस्त ईओ, डीपीआरओ एवं एसडीएम को निर्देशित किया कि साफ-सफाई एवं पानी की समुचित व्यवस्था रखी जाए। विद्युत विभाग को जर्जर तारों को दुरुस्त करने के साथ निर्बाध विद्युत आपूर्ति करने के निर्देश दिए। अगर कहीं सड़को पर गड्ढे हों तो दुरुस्त करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने सभी एसडीएम, पुलिस क्षेत्राधिकारी और प्रभारी निरीक्षक को निर्देश देते हुए कहा कि त्योहार के दौरान अपने-अपने क्षेत्र में निरंतर भ्रमणशील रहते हुए शांति व्यवस्था को बनाए रखें। अंत में जिलाधिकारी ने उपस्थित सभी का धन्यवाद करते हुए कहा कि सभी विभाग समय से पूरा इंतजाम करेंगे और यह त्योहार पिछले हर बार की तरह इस बार भी शांतिपूर्ण और सद्भाव के साथ मनाया जाएगा। अपर पुलिस अधीक्षक अखिलेश भदौरिया ने कहा कि त्योहार को शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने के लिए पुलिस की चाक चौबंद व्यवस्था रहेगी। उन्होंने उपस्थित सभी से पुलिस प्रशासन का सहयोग की अपील करते हुए कहा कि वेस्टेज को पूर्णतः ढककर ही ले जाया जाए, और ध्यान रखें कि वेस्टेज सडक पर न गिरे। सुनिश्चित किया जाए कि डम्पिंग एरिया पूर्ण रूप से कवर हो। नमाज ईदगाह और मस्जिद के परिसर में ही अदा की जाए। उन्होंने कहा कि प्रतिबन्धित जानवरों की कुबार्नी न दी जाए। बैठक में अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व गरिमा सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक अखिलेश भदौरिया सहित समस्त एसडीएम, ईओ एवं संबंधित अधिकारी एवं पीस कमेटी के सदस्य उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी ने उप निबन्धक कार्यालयों में पंजीकृत सर्वाधिक मूल्य के बैनामों का किया निरीक्षण

अमरोहा (सब का सपना):- शासन द्वारा दिये गये निदेशों के क्रम में जिलाधिकारी डॉ0 नितिन गौड़ द्वारा उप निबन्धक कार्यालयों में पंजीकृत सर्वाधिक मूल्य के बैनामों का निरीक्षण किया गया। जिलाधिकारी द्वारा उप निबन्धक, सदर एवं तहसीलदार, सदर के चिन्हीकरण के आधार पर सहायक महानिरीक्षक निबन्धन, अनूप कुमार सिन्हा के साथ जोया रोड स्थित सम्पत्ति गाटा संख्या 3208 में अन्तरित सम्पत्ति का निरीक्षण किया गया। इसके अलावा उप जिलाधिकारी, धनौरा व उप निबन्धक, धनौरा के चिन्हीकरण के आधार मेक्डोनाल्ड के निकट सम्पत्ति गाटा संख्या 14 में अन्तरित सम्पत्ति का निरीक्षण किया गया। जिसमें पक्षकारों द्वारा तथ्यों को छिपाकर करापवंचन का मामला प्रकाश में आया है। जिसमें लगभग रू0 3,90,960/- की स्टाम्प की प्रथमदृष्टया कमी पाई गई। मौके पर सहायक महानिरीक्षक निबन्धन, अमरोहा को उक्त प्रकरणों में वाद दर्ज कराने के निर्देश दिये गये और उप निबन्धक कार्यालयों में पंजीकृत विलेखों की गुणवत्तापूर्ण जांच के भी निर्देश दिये गये। इस अवसर पर सहायक महानिरीक्षक निबन्धन, अमरोहा अनूप कुमार सिन्हा सहित संबंधित उपस्थित रहे।

मंडी धनौरा में बजट जारी होने के बाद एनएचएम कर्मियों का धरना-प्रदर्शन समाप्त

धनौरा/अमरोहा (सब का सपना):- जनपद की मंडी धनौरा तहसील में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) कर्मियों ने धरना प्रदर्शन समाप्त कर दिया है उन्होंने इस धरना प्रदर्शन की समाप्ति बजट जारी होने के बाद एवं प्रदेश नेतृत्व के आव्हान पर की लेकिन अपनी मांगों और सरकार के रवैए को लेकर उनका असंतोष अभी भी बरकरार है।बता दें कि मंडी धनौरा में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के बैनर तले सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) मंडी धनौरा में चल रहा स्वास्थ्य विभाग के संविदा कर्मचारियों का धरना शुक्रवार को समाप्त हो गया। यह धरना सरकार द्वारा बजट जारी किए जाने और प्रदेश नेतृत्व के आह्वान पर वापस लिया गया है। हालांकि, कर्मचारियों में सरकार के रवैए को लेकर अभी भी भारी निराशा और असंतोष व्याप्त है। संविदा कर्मचारियों का कहना है कि सरकार उनकी जायज मांगों की लगातार अनदेखी कर रही है। धरना समाप्त करते समय कर्मचारियों ने सरकार से जल्द से जल्द ठोस कदम उठाने की मांग दोहराई। धरने को संबोधित करते हुए प्रशांत कुमार ने कहा कि सरकार ने नियमित कर्मचारियों का महंगाई भत्ता (डीए) तो बढ़ा दिया है, लेकिन संविदा कर्मचारियों को सम्मानजनक वेतन और भत्तों से वंचित रखा जा रहा है। उन्होंने सरकार से इस भेदभावपूर्ण नीति पर तुरंत विचार करने का आग्रह किया। डॉ. कुलदीप शर्मा ने मांग की कि अन्य राज्यों की तर्ज पर उत्तर प्रदेश में भी संविदा कर्मियों के लिए 'समान पद, समान सेवा लाभ' की व्यवस्था लागू की जाए। डॉ. सीमा ने कहा कि बढ़ती महंगाई के कारण संविदा कर्मियों के लिए घर चलाना मुश्किल हो रहा है, इसलिए उन्हें भी महंगाई भत्ता दिया जाना चाहिए। डॉ. अनामिका चौधरी, डॉ. परवेज और डॉ. मोहित विश्नोई ने संयुक्त रूप से कहा कि स्वास्थ्य विभाग की रीढ़ कहे जाने वाले इन कर्मचारियों में सरकार के प्रति गहरा असंतोष है। उन्होंने सरकार से बिना किसी देरी के स्वास्थ्य कर्मियों की इन मांगों को मानने का आग्रह किया।कर्मचारियों ने चेतावनी दी कि भले ही प्रदेश नेतृत्व के आह्वान पर फिलहाल धरना समाप्त कर दिया गया है, लेकिन जब तक उन्हें सम्मानजनक वेतन और अधिकार नहीं मिल जाते, उनकी हक की लड़ाई जारी रहेगी।

मुख्यमन्त्री ग्रामोद्योग रोजगार योजना के अन्तर्गत 70 लाख रू0 पूंजी निवेश के साथ 14 इकाइयां स्थापित करानें का मिला लक्ष्य

अमरोहा (सब का सपना):- जिला ग्रामोद्योग अधिकारी गजेन्द्र सिंह द्वारा बताया गया कि वित्तीय वर्ष 202-27 के लिये जनपद को विभिन्न योजनाओं में लक्ष्य प्राप्त हो चुके हैं इच्छुक व्यक्ति वांछित योजना में आवेदन कर सकते हैं। को मुख्यमन्त्री ग्रामोद्योग रोजगार योजना के अन्तर्गत 70 लाख रू0 पूंजी निवेश के साथ 14 इकाईयों स्थापित करानें को लक्ष्य प्राप्त हुआ है। आवेदक - योजना ऑनलाईन संचालित है जिसका लिंक https://mmgrykhadi. upsdc.gov.in/ है । ग्रामीण क्षेत्र में निर्माण व सेवा उद्योग की स्थापना के लिये आवेदन स्वीकार्य हैं। योजना के अन्तर्गत लाभार्थियों को ब्याज उपादान सब्सिडी देने का प्रावधान है। सामान्य श्रेणी के पुरूष कुल परियोजना लागत में निर्धारित पूंजीगत ऋण पर बैंक द्वारा प्रभारित ब्याज में से 4 प्रतिशत ब्याज उद्यमी द्वारा वहन किया जायेगा, शेष ब्याज का भुगतान ब्याज उपादान के रूप में 05 वर्षों तक प्रतिवर्ष 20 प्रतिशत घटते क्रम में शेष पूंजीगत ऋण पर अनुमन्य है एवं आरक्षित वर्ग (अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन-जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक, महिला, भूतपूर्व सैनिक एवं दिव्यांग) को कुल परियोजना लागत में निर्धारित पूंजीगत ऋण पर बैंक द्वारा प्रभारित समस्त ब्याज की धनराशि ब्याज उपादान के रूप में 20 प्रतिशत प्रतिवर्ष घटते हुए क्रम में पूंजीगत ऋण पर 05 वर्षों तक अनुमन्य रहेगा। पोपकॉर्न मेकिंग मशीन निःशुल्क टूलकिटस वितरण योजना - रोजगार सृजन के लिये निःशुल्क मशीन प्रदान की जाती है- योजनान्तर्गत 08 मशीनें वितरित किये जानें को लक्ष्य प्राप्त हुआ है। आवेदक ग्रामीण क्षेत्र के स्थायी निवासी हों जिनकी उम्र 18 से 50 वर्ष हो, समाज के आर्थिक रूप से कमजोर / बेरोजगार / भुर्जी जाति के होना चाहिये। योजना ऑन लाईन संचालित है जिसके लिये विभागीय बेबसाईट upkvib.gov.in की ऑनलाइन सेवाओं के अन्तर्गत 'आनलाइन टूलकिटस पंजीकरण एवं आवंटन में आवेदन किया जा सकता है। दोना में किंग मशीन निःशुल्क टूलकिटस वितरण योजना- रोजगार सृजन के लिये निःशुल्क मशीन प्रदान की जाती है- योजनान्तर्गत 08 मशीनें वितरित किये जानें को लक्ष्य प्राप्त हुआ है। आवेदक ग्रामीण क्षेत्र के स्थायी निवासी हों जिनकी उम्र 18 से 50 वर्ष हो। समाज के आर्थिक रूप से कमजोर / बेरोजगार / कार्य मे रूचित रखने वाले परम्परागत कारीगर होना चाहिये। योजना ऑन लाईन संचालित है जिसके लिये विभागीय बेबसाईट upkvib.gov.in की ऑनलाइन सेवाओं के अन्तर्गत 'आनलाइन टूलकिटस पंजीकरण एवं आवंटन में आवेदन किया जा सकता है। उत्पाद विकास मानकीकरण एवं गुणवत्ता विनिश्चय योजना (हनी मिशन) हनी बाक्स मधुमक्खी सहित निःशुल्क टूलकिटस वितरण योजना - रोजगार सृजन के लिये निःशुल्क मशीन प्रदान की जाती है- योजनान्तर्गत 20 आवेदकों को 05-05 मधु बॉक्स व टूल किटस वितरित किये जानें को लक्ष्य प्राप्त हुआ है। आवेदक ग्रामीण क्षेत्र के स्थायी निवासी हों जिनकी उम्र 18 से 50 वर्ष हो । समाज के आर्थिक रूप से कमजोर / बेरोजगार / कार्य मे रूचित रखने वाले परम्परागत कारीगर होना चाहिये। योजना ऑन लाईन संचालित है जिसके लिये विभागीय बेबसाईट upkvib.gov.in की ऑनलाइन सेवाओं के अन्तर्गत आनलाइन टूलकिटस पंजीकरण एवं आवंटन में आवेदन किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त उ0 प्र0 माटीकला बोर्ड द्वारा मुख्यमंत्री माटीकला रोजगार योजना के अन्तर्गत माटीकला उत्पाद निर्माण के लिये 04 इकाईयों की स्थापना करायी जानी है तथा 30 व्यक्तियों को निःशुल्क विद्युत चालित चाक वितरित किये जानें हैं।

चिलचिलाती गर्मी में इंसानियत की मिसाल, राहगीरों को बांटा ठंडा शरबत

भीषण गर्मी के बीच ठंडा शरबत पीकर लोगों के चेहरों पर साफ दिखाई दी राहत

बहजोई/सम्भल(सब का सपना):- जनपद के बहजोई क्षेत्र में शुक्रवार को पड़ रही भीषण गर्मी और तेज धूप के बीच मानव सेवा की एक खूबसूरत मिसाल देखने को मिली। ईदगाह के पास समाजसेवी डॉ. मुन्तजिम कुरैशी की ओर से राहगीरों, वाहन चालकों और स्थानीय लोगों के लिए ठंडा शरबत वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

दोपहर के समय तेज धूप और उमस से लोग बेहाल नजर आ रहे थे। ऐसे में शरबत वितरण शिविर लोगों के लिए राहत का केंद्र बन गया। वहां से गुजरने वाले सैकड़ों लोगों ने रुककर ठंडा शरबत पिया और आयोजनकताओं का आभार व्यक्त किया। छोटे बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी ने इस सेवा कार्य की सराहना की। कार्यक्रम के दौरान स्वयंसेवकों ने पूरी व्यवस्था संभालते हुए लोगों को व्यवस्थित तरीके से शरबत वितरित किया। भीषण गर्मी के बीच ठंडा शरबत पीकर लोगों के चेहरों पर राहत साफ दिखाई दी। कई राहगीरों ने कहा कि इस तरह के सेवा कार्य समाज में आपसी भाईचारे और इंसानियत को मजबूत करते हैं। डॉ. मुन्तजिम कुरैशी ने कहा कि गर्मी के मौसम में राहगीरों को राहत पहुंचाना एक नेक कार्य है। उन्होंने कहा कि समाज के सक्षम लोगों को जरूरतमंदों की मदद के लिए आगे आना चाहिए। उनका उद्देश्य सिर्फ लोगों की सेवा करना और इंसानियत का संदेश देना है।

इस मौके पर क्षेत्र के कई लोग और स्थानीय निवासी भी मौजूद रहे। सभी ने डॉ. मुन्तजिम कुरैशी की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे सामाजिक कार्यों से समाज में सकारात्मक संदेश जाता है और लोगों को एक-दूसरे की मदद करने की प्रेरणा मिलती है।

उच्च शिक्षण संस्थानों में ड्रेस कोड लागू करने के फैसले का व्यापार मंडल ने किया स्वागत

युवा व्यापारियों ने मिठाई खिलाकर जताई खुशी, सरकार के निर्णय को बताया ऐतिहासिक

चंदौसी/सम्भल(सब का सपना):- उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा राज्य के सभी विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए ड्रेस कोड अनिवार्य किए जाने के निर्णय का अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल (युवा इकाई) चंदौसी ने स्वागत किया है। संगठन के नगर अध्यक्ष अनुज वार्ष्णेय अन्नू के नेतृत्व में कैथल गेट स्थित एक निजी प्रतिष्ठान पर कार्यकताओं एवं पदाधिकारियों ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर खुशी जाहिर की। इस अवसर पर नगर अध्यक्ष अनुज वार्ष्णेय अन्नू ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उच्च शिक्षा मंत्री योगेन्द्र उपाध्याय द्वारा लिया गया यह निर्णय युवाओं में अनुशासन, समानता और सामाजिक समरसता की भावना को मजबूत करेगा। उन्होंने कहा कि ड्रेस कोड लागू होने से शिक्षण संस्थानों में अमीर-गरीब का भेदभाव समाप्त होगा और सभी विद्यार्थियों को समान वातावरण मिलेगा। मौसम गुप्ता ने कहा कि ड्रेस कोड लागू होने से विद्यालयों और महाविद्यालयों का वातावरण अधिक अनुशासित, सकारात्मक और गरिमामय बनेगा। इससे परिसर की सुरक्षा व्यवस्था भी मजबूत होगी तथा विद्यार्थियों का ध्यान बाहरी दिखावे से हटकर पूरी तरह पढ़ाई और अपने भविष्य पर केंद्रित रहेगा। प्रभात कृष्णा ने कहा कि अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल की युवा इकाई प्रदेश सरकार के इस छात्र हितैषी और अनुशासनात्मक फैसले का आभार व्यक्त करती है। उन्होंने इसे शिक्षा व्यवस्था में सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया। कार्यक्रम के दौरान प्रभात कृष्णा, मौसम गुप्ता, मंतेश वार्ष्णेय, प्रदीप वार्ष्णेय, भरत अग्रवाल, निशांत शर्मा, तुषार कृष्टल, शुभम अग्रवाल, रितिक वार्ष्णेय, गोविंद, वीरपाल राणा सहित संगठन के कई पदाधिकारी एवं सदस्य मौजूद रहे।

रिश्वतखोरी के आरोप में लेखपाल निलंबित, डीएम ने दिए जांच के आदेश

चक मार्ग खुलवाने के नाम पर 15 हजार रुपये लेने का आरोप, वायरल वीडियो के बाद हुई कार्रवाई

बहजोई/संभल(सब का सपना):- मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्राथमिकताओं में शामिल जनसुनवाई कार्यक्रम के अंतर्गत बृहस्पतिवार को जिलाधिकारी अंकित खंडेलवाल के कार्यालय में तहसील चंदौसी क्षेत्र के ग्राम चाटन निवासी गजराम सिंह पुत्र होराम सिंह अपनी शिकायत लेकर पहुंचे। पीड़ित ने जिलाधिकारी को अवगत कराया कि गांव में चक मार्ग खुलवाने के लिए उन्होंने क्षेत्रीय लेखपाल राजवीर सिंह से अनुरोध किया था, लेकिन लेखपाल द्वारा समस्या का समाधान करने के बजाय उनके साथ अभद्र भाषा का प्रयोग किया गया। शिकायत में यह भी बताया गया कि चक मार्ग खुलवाने के एवज में लेखपाल द्वारा नेपाल नामक व्यक्ति के माध्यम से 15 हजार रुपये रिश्वत लिए जाने संबंधी एक वीडियो भी वायरल हुई है। मामले को गंभीरता एवं संवेदनशीलता से लेते हुए जिलाधिकारी अंकित खंडेलवाल ने तत्काल उप जिलाधिकारी चंदौसी नीतू रानी को जांच के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने स्पष्ट कहा कि भ्रष्टाचार एवं जनसुनवाई से जुड़ी शिकायतों में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी तथा दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

उप जिलाधिकारी चंदौसी के निर्देश पर नायब तहसीलदार द्वारा मामले की जांच की गई। जांच के दौरान संबंधित लेखपाल से गहन पूछताछ की गई, जिसमें लेखपाल ने स्वीकार किया कि नेपाल नामक व्यक्ति पिछले माह तक उनके साथ कार्य करता था। नायब तहसीलदार द्वारा प्रस्तुत जांच आख्या में रिश्वत लेने के आरोप प्रथम दृष्टया सत्य पाए जाने पर लेखपाल के विरुद्ध कार्रवाई की संस्तुति की गई। इसके आधार पर उप जिलाधिकारी चंदौसी द्वारा उ.प्र. सरकारी सेवक (अनुशासन एवं अपील) नियमावली-1999 के तहत लेखपाल क्षेत्र चाटन, तहसील चंदौसी राजवीर सिंह को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया।

साथ ही मामले की विस्तृत जांच के लिए नियम-7 के अंतर्गत तहसीलदार चंदौसी को जांच अधिकारी नामित किया गया है। प्रशासन की इस कार्रवाई के बाद क्षेत्र में चर्चा का माहौल बना हुआ है।

कानून व्यवस्था एवं अभियोजन कार्यों की समीक्षा बैठक का हुआ आयोजन

बहजोई/संभल(सब का सपना):- कलक्ट्रेट सभागार में बृहस्पतिवार को जिलाधिकारी अंकित खंडेलवाल एवं पुलिस अधीक्षक कृष्ण कुमार बिश्नोई की अध्यक्षता में कानून व्यवस्था एवं अभियोजन कार्यों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में जनपद में अपराध नियंत्रण, अभियोजन कार्यों की प्रगति तथा विभिन्न अधिनियमों के अंतर्गत की गई कार्रवाई की विस्तृत समीक्षा की गई। बैठक के दौरान शस्त्र अधिनियम से संबंधित मामलों सहित जुआ, एनडीपीएस, आबकारी एवं गुंडा एक्ट के अंतर्गत की गई कार्यवाहियों की समीक्षा की गई। इसके अलावा गैंगस्टर एक्ट, एनएसए, गोकशी, पॉक्सो एक्ट, जिला बदर एवं गैंग चार्ट से जुड़े मामलों पर भी विस्तार से चर्चा की गई। जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने संबंधित अधिकारियों को प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

अभियोजन कार्यों की समीक्षा करते हुए न्यायालयों में विचाराधीन वादों, गैंगस्टर कोर्ट में लंबित मामलों, बीएनएस एवं डीजीसी संवर्ग से संबंधित प्रकरणों के निस्तारण और सजा की स्थिति पर भी चर्चा की गई। जिलाधिकारी अंकित खंडेलवाल ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि आगामी बैठक में सभी अधिकारी प्रत्येक प्रकरण का गहन अध्ययन कर पूर्ण विवरण के साथ उपस्थित हों, ताकि मामलों की प्रभावी समीक्षा कर समयबद्ध कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके।

बैठक में अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) सौरभ कुमार पाण्डेय, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. तरुण पाठक, उप जिलाधिकारी सम्भल निधि पटेल, उप जिलाधिकारी गुन्नौर विकास चन्द, उप जिलाधिकारी चंदौसी नीतू रानी, क्षेत्राधिकारी चंदौसी दीपक तिवारी, क्षेत्राधिकारी सम्भल कुलदीप कुमार, एआरटीओ अमिताभ चतुर्वेदी, अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग सुनील प्रकाश सहित संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

ब्राह्मण महासभा प्रतिनिधिमंडल ने जिलाधिकारी से की मुलाकात, पुष्प गुच्छ भेंट कर किया

अमरोहा (सब का सपना):- जनपद शुक्रवार अखिल भारतवर्षीय ब्राह्मण महासभा के एक प्रतिनिधिमंडल ने शुक्रवार को जिलाधिकारी नितिन गौड़ से मुलाकात की। इस दौरान संगठन के जिलाध्यक्ष डॉ. राजीव शुक्ला के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने जिलाधिकारी को पुष्प गुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया। यह मुलाकात जिला मुख्यालय पर हुई। बता दें कि महासभा के जिला पदाधिकारी शुक्रवार को जिला मुख्यालय पर एकत्र हुए थे। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष डॉ. राजीव शुक्ला ने बताया कि 24 तारीख को उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक जनपद में आ रहे हैं। महासभा का एक प्रतिनिधिमंडल उनसे भी मुलाकात करेगा। डॉ. शुक्ला ने कहा कि यह प्रतिनिधिमंडल उपमुख्यमंत्री से मिलकर ब्राह्मण समाज के उत्थान और सम्मान के लिए राज्य सरकार से बिंदुवार मांग करेगा। उन्होंने यह भी कहा कि ब्राह्मण समाज ही संपूर्ण हिंदू समाज का नेतृत्व करता है इस अवसर पर महासभा के जिला महामंत्री पं. मनु शर्मा, पं. कपिल शर्मा, जिला मंत्री पवन शर्मा, जिला संगठन मंत्री पवन कौशिक, आलोक शर्मा, राजीव शर्मा और अखिलेश वशिष्ठ सहित कई अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

गजरौला क्षेत्र में अनैतिक गतिविधियों पर पुलिस प्रशासन की कार्यवाही, दो मकान किए सील

गजरौला/अमरोहा (सब का सपना):- जनपद के गजरौला औद्योगिक नगरी में हो रही अनैतिक गतिविधियों के खिलाफ पुलिस प्रशासन ने छापेमारी कर दो मकानों को सील कर किया है और इस मामले में अग्रिम जांच जारी है। पुलिस प्रशासन द्वारा संयुक्त रूप से की गई इस कार्रवाई को औद्योगिक क्षेत्र स्थित यूएस फैक्ट्री के पास किया गया है। बता दें कि शुक्रवार को पुलिस प्रशासन द्वारा की इस कार्रवाई के दौरान मौके मंडी धनौरा क्षेत्राधिकारी अंजलि कटारिया, नायब तहसीलदार और गजरौला प्रभारी निरीक्षक मनोज कुमार भारी पुलिस बल के साथ मौजूद रहे। पुलिस टीम को देखते ही वहां मौजूद लोग फरार हो गए। प्राप्त जानकारी अनुसार इस मामले पुलिस को काफी समय से इस इलाके में अनैतिक गतिविधियां संचालित होने की शिकायतें मिल रही थीं इन्हीं शिकायतों के आधार पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने इन दो मकानों को बंद कर दिया।पुलिस अधिकारियों के अनुसार, मामले की जांच जारी है और फरार लोगों की तलाश की जा रही है। सीओ अंजलि कटारिया ने बताया कि दोनों मकानों में लगातार अनैतिक गतिविधियों की सूचना मिल रही थी, हालांकि छापेमारी के दौरान मौके पर कोई व्यक्ति नहीं मिला।उन्होंने कहा कि दोनों मकानों पर लगातार निगरानी रखी जाएगी। भविष्य में किसी भी प्रकार की अवैध गतिविधि पाए जाने पर मकान मालिकों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

सड़क हादसे में घायलों को मिलेगा 1.5 लाख तक का मुफ्त कैशलेस इलाज

बहजोई/सम्भल(सब का सपना):- सड़क दुर्घटनाओं में जान गंवाने वालों की संख्या कम करने और घायलों को समय पर बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सरकार द्वारा नई कैशलेस इलाज योजना लागू की गई है। संभल के एआरटीओ अमिताभ चतुर्वेदी ने जानकारी देते हुए बताया कि मोटर वाहन अधिनियम की धारा 164बी के तहत स्थापित मोटर वाहन दुर्घटना कोष के माध्यम से अब सड़क हादसे में घायल प्रत्येक व्यक्ति को 1.5 लाख रुपये तक का मुफ्त कैशलेस इलाज उपलब्ध कराया जाएगा।

उन्होंने बताया कि यह सुविधा दुर्घटना के दिन से अधिकतम 7 दिनों तक लागू रहेगी। खास बात यह है कि दुर्घटना करने वाले वाहन का बीमा हो या नहीं, घायल का इलाज किसी भी स्थिति में नहीं रुकेगा। इलाज का पूरा खर्च सरकार और बीमा कंपनियां वहन करेंगी। एआरटीओ ने बताया कि यह योजना मुख्य रूप से पीएमजेएवाई में सूचीबद्ध अस्पतालों में लागू की गई है। पूरी प्रक्रिया को टीएमएस 2.0 और ई-डार पोर्टल के माध्यम से पूरी तरह डिजिटल बनाया गया है, जिससे इलाज और क्लेम प्रक्रिया में पारदर्शिता बनी रहे। उन्होंने कहा कि यदि कोई घायल व्यक्ति पुलिस की सहायता के बिना सीधे अस्पताल पहुंचता है, तब भी इलाज में किसी प्रकार की कागजी बाधा नहीं आएगी। गंभीर अथवा जानलेवा चोट के मामलों में अस्पताल तुरंत इलाज शुरू करेगा और घायल की जानकारी टीएमएस पोर्टल पर अपलोड करेगा, जो स्वतः ई-डार पोर्टल पर दिखाई देगी। वहीं सामान्य चोट के मामलों में अस्पताल प्राथमिक उपचार देगा और पुलिस सत्यापन के बाद आगे का इलाज शुरू किया जाएगा।

घायल की पहचान सुनिश्चित करने के लिए पुलिस ई-डार पोर्टल पर एक विशेष विक्टिम आईडी जनरेट करेगी, जिसे अस्पताल के रिकॉर्ड से लिंक किया जाएगा। इस योजना में पुलिस की भूमिका को भी समयबद्ध और जवाबदेह बनाया गया है। गंभीर मामलों में पुलिस को 48 घंटे के भीतर और सामान्य मामलों में 24 घंटे के अंदर दुर्घटना का सत्यापन ई-डार पोर्टल पर करना होगा। यदि तय समय सीमा में सत्यापन नहीं होता है तो मामला स्वतः डीजीपी लॉग-इन तक पहुंच जाएगा। एआरटीओ अमिताभ चतुर्वेदी ने बताया कि यदि ई-डार पोर्टल पर केस अस्वीकृत हो जाता है तो मरीज योजना के दायरे से बाहर हो जाएगा और इलाज का खर्च स्वयं वहन करना पड़ेगा।

मरीज के डिस्चार्ज होने के बाद क्लेम सेटलमेंट की प्रक्रिया भी तेज होगी। यदि दुर्घटना करने वाला वाहन बीमित है तो भुगतान जनरल इंश्योरेंस काउंसिल के माध्यम से किया जाएगा। वहीं बिना बीमा वाले वाहन के मामलों में भुगतान जिलाधिकारी के माध्यम से केंद्र सरकार समर्थित पीएफएमएस खाते से किया जाएगा। उन्होंने बताया कि यदि 10 दिनों के भीतर संबंधित एजेंसी की ओर से कोई जवाब नहीं आता है, तो सिस्टम स्वतः क्लेम को स्वीकृत मानकर अस्पताल को भुगतान जारी कर देगा। यह योजना सड़क हादसों में घायलों को समय पर इलाज उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है।

संभावित बाढ़ और लू से बचाव को लेकर कलक्ट्रेट में स्टीयरिंग ग्रुप की बैठक आयोजित

बहजोई/सम्भल(सब का सपना):- कलक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी अंकित खंडेलवाल के निर्देशन एवं मुख्य विकास अधिकारी गोरखनाथ भट्ट की अध्यक्षता में आपदा प्रबंधन के अंतर्गत स्टीयरिंग ग्रुप की बैठक आयोजित की गई। बैठक में जनपद में संभावित बाढ़ एवं लू से बचाव को लेकर की गई तैयारियों की विस्तृत समीक्षा की गई। बैठक के दौरान आपदा प्रबंधन विशेषज्ञ अच्युत कुमार यादव ने जानकारी देते हुए बताया कि जनपद में गंगा नदी के बाएं तट पर बाढ़ सुरक्षा के लिए नगला अजमेरी तटबंध, ईशमपुर तटबंध तथा हरिबाबा तटबंध निर्मित हैं। उन्होंने बताया कि गुन्नौर तहसील क्षेत्र गंगा नदी की बाढ़ से सर्वाधिक प्रभावित होता है। बैठक में बाढ़ से निपटने हेतु संस्थागत व्यवस्थाओं, बाढ़ शरणालयों एवं प्रबंधन दलों की तैयारियों पर विस्तार से चर्चा की गई। इसके साथ ही बाढ़ चौकियों की स्थिति, नावों की उपलब्धता, गोताखोरों की तैनाती तथा महत्वपूर्ण फोन नंबरों की उपलब्धता की भी समीक्षा की गई। मुख्य विकास अधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को सभी व्यवस्थाएं समय रहते दुरुस्त रखने के निर्देश दिए। मुख्य विकास अधिकारी गोरखनाथ भट्ट ने पिछले 10 वर्षों में ईशमपुर तटबंध की स्थिति के संबंध में जानकारी प्राप्त करते हुए संबंधित विभाग को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। वहीं सिंचाई विभाग से बाढ़ सुरक्षा तैयारियों के तहत बल्लियों एवं रेत से भरी बोरियों की उपलब्धता के बारे में जानकारी ली गई। बैठक में पुलिस एवं पीएसी की तैयारियों, स्वास्थ्य विभाग की व्यवस्थाओं, विद्युत विभाग तथा पशुपालन विभाग द्वारा किए गए इंतजामों की भी समीक्षा की गई। मुख्य विकास अधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि आपदा की स्थिति में त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए इमरजेंसी कम्यूनिकेशन प्लान पहले से तैयार रखा जाए। वर्तमान मौसम परिस्थितियों को देखते हुए लू एवं गर्म हवाओं से बचाव के उपायों पर भी विशेष चर्चा की गई। अधिकारियों को आमजन में जागरूकता बढ़ाने तथा आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी न्यायिक सौरभ कुमार पाण्डेय, उप जिलाधिकारी गुन्नौर विकास चन्द्र, डिप्टी कलेक्टर रामानुज, अधिशासी अभियंता सिंचाई विभाग राजीव कुमार, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. शैलेन्द्र सिंह सहित संबंधित विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

मजदूरी करने गया युवक नहीं लौटा घर, परिवार में मचा कोहराम

बिजनौर (सब का सपना):- जनपद के रेहड़ थाना क्षेत्र के त्रिलोकपुर गांव में उस समय हड़कंप मच गया, जब खेत पर पानी लगाने गए एक मजदूर का शव अगले दिन नहर में पड़ा मिला। रातभर परिवार और ग्रामीण उसकी तलाश करते रहे, लेकिन सुबह खेत के पास नहर में शव मिलने से परिवार में चीख-पुकार मच गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतक की पहचान 35 वर्षीय पप्पू पुत्र उमराव सिंह निवासी त्रिलोकपुर के रूप में हुई है। परिजनों के अनुसार पप्पू गुरुवार शाम गांव के ही एक किसान के खेत पर मजदूरी करने और पानी लगाने के लिए गया था। देर रात तक जब वह घर नहीं लौटा तो परिवार को चिंता हुई। इसके बाद परिजनों और ग्रामीणों ने उसकी तलाश शुरू की, लेकिन रात में उसका कोई पता नहीं चल सका। शुक्रवार सुबह ग्रामीणों और परिजनों ने दोबारा खोजबीन शुरू की। इसी दौरान खेत के पास स्थित नहर में पप्पू का शव पड़ा मिला। शव दिखाई देने पर मौके पर ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई और परिवार में कोहराम मच गया। सूचना मिलने पर रेहड़ थाना प्रभारी राजीव कुमार वर्मा पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण कर आवश्यक कानूनी कार्रवाई पूरी की और शव को पोस्टमार्टम के लिए बिजनौर भेज दिया। पुलिस आसपास के लोगों से पूछताछ कर मामले की जांच में जुटी हुई है। इंस्पेक्टर राजीव कुमार वर्मा ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने और परिजनों से तहरीर मिलने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। घटनास्थल के आसपास शराब सेवन से संबंधित कुछ अवशेष भी मिले हैं। प्रारंभिक जानकारी में यह भी सामने आया है कि मृतक शराब पीने का आदी था, हालांकि मौत के वास्तविक कारणों की पुष्टि पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही हो सकेगी। मृतक अपने पीछे पत्नी राखी देवी, दो बेटे और एक बेटी छोड़ गया है। घटना के बाद पूरे गांव में शोक का माहौल बना हुआ है।

स्कूल के बाहर छात्र पर हमला, तमंचे से फायरिंग का आरोप

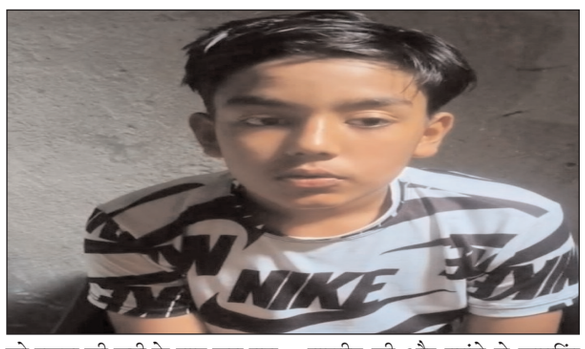

बिजनौर (सब का सपना):- हल्दौर थाना क्षेत्र के गांव झालू में स्कूल से घर लौट रहे एक छात्र पर हमला किए जाने और तमंचे से फायरिंग करने का मामला सामने आया है। घटना के बाद इलाके में हड़कंप मच गया। घायल छात्र को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां से उसे हायर सेंटर रेफर कर दिया गया। पुलिस ने पीड़ित पक्ष की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार मोहल्ला कानूनगोयान निवासी गौरव पाल ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि उनका पुत्र यश देहरादून पब्लिक इंटर कॉलेज झालू में कक्षा 9 का छात्र है। आरोप है कि 20 मई को स्कूल की छुट्टी के बाद जब यश घर लौट रहा था, तभी गांव के मुन्ना और उसके चार-पांच साथियों ने रास्ते में घेरकर उस पर हमला कर दिया। पीड़ित पक्ष का आरोप है कि आरोपियों ने छात्र के साथ बेरहमी से मारपीट की और तमंचे से फायरिंग भी की। हमले में छात्र गंभीर रूप से घायल होकर सड़क पर गिर पड़ा। घटना के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। आसपास मौजूद लोगों और स्कूल कर्मियों ने घायल छात्र को तुरंत उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाया। चिकित्सकों के अनुसार छात्र के सिर में गंभीर चोट आई है, जिसके चलते उसे बेहतर इलाज के लिए हायर सेंटर रेफर किया गया। घटना के बाद परिवार में दहशत का माहौल बना हुआ है। पीड़ित परिवार ने आरोप लगाया कि घटना के बाद आरोपी पक्ष ने उन्हें जान से मारने की धमकी भी दी। मामले में थाना हल्दौर पुलिस ने तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर लिया है। थाना प्रभारी किशनअवतार सिंह ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। जांच के आधार पर आरोपियों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

कार्यस्थल पर महिलाओं की सुरक्षा को लेकर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

बिजनौर (सब का सपना):- उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के निदेशानुसार एवं जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण बिजनौर श्री संजय कुमार सप्तम के मार्गदर्शन में नगर पालिका, तहसील चांदपुर में कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न निषेध एवं निवारण अधिनियम-2013 विषय पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव सुश्री नैन्सी धुन्ना ने की। उन्होंने अधिनियम की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि यौन उत्पीड़न से जुड़े मामलों में शिकायतकर्ता और उत्तरदाता दोनों की पहचान गोपनीय रखी जाती है। यदि जांच में शिकायत सही पाई जाती है तो आरोपी के खिलाफ विभागीय कार्रवाई की जा सकती है। उन्होंने कहा कि इस कानून का उद्देश्य महिलाओं को सुरक्षित और अनुकूल कार्य वातावरण उपलब्ध कराना तथा कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न से सुरक्षा प्रदान करना है। कार्यक्रम में नायब तहसीलदार, महिलाएं, बच्चियां और पराविधिक स्वयंसेवक उपस्थित रहे। वहीं कार्यक्रम से लौटते समय सचिव नैन्सी धुन्ना ने विदुर कुटी दारानगर गंज स्थित वृद्धाश्रम का औचक निरीक्षण भी किया। निरीक्षण के दौरान केंद्र प्रभारी अनुपस्थित मिलीं। उपस्थित कर्मचारियों ने बताया कि वृद्धजनों के लिए भोजन, रहने के कमरे, कपड़े और बिस्तरों की पर्याप्त व्यवस्था है। वृद्धाश्रम में मौजूद बुजुर्गों से बातचीत करने पर पता चला कि किसी कोई समस्या नहीं है।

बिजनौर में जनगणना 2027 का प्रथम चरण शुरू

बिजनौर (सब का सपना):- भारत की जनगणना 2027 के प्रथम चरण के तहत जनपद की पांचों तहसीलों और 18 नगर निकायों में मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना का कार्य शुरू कर दिया गया है। जिला प्रभारी जे.पी. यादव ने विभिन्न चार्ज क्षेत्रों का निरीक्षण कर प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों द्वारा किए जा रहे कार्यों का जायजा लिया। उन्होंने सही तरीके से मकानों की नंबरिंग करने तथा डाटा कलेक्शन के दौरान आवश्यक सावधानियां बरतने के निर्देश दिए। वहीं विभिन्न चार्ज अधिकारियों ने भी अपने-अपने क्षेत्रों में पहुंचकर प्रगणकों और पर्यवेक्षकों के कार्यों का निरीक्षण किया तथा आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए।

महिला ने युवक पर दुष्कर्म और ब्लैकमेलिंग का लगाया आरोप

बिजनौर (सब का सपना):- नांगल थाना क्षेत्र की एक महिला ने युवक पर दुष्कर्म और ब्लैकमेल करने का गंभीर आरोप लगाया है। पीड़िता ने पुलिस अधीक्षक से शिकायत कर आरोपी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। महिला का आरोप है कि आरोपी निक्की उर्फ निखिल रात में उसके घर में घुस आया और चाकू के बल पर दुष्कर्म किया। पीड़िता के अनुसार आरोपी ने घटना का वीडियो भी बना लिया और उसे वायरल करने की धमकी देकर ब्लैकमेल करता रहा। महिला ने बताया कि शोर सुनकर उसकी सास और देवर मौके पर पहुंच गए, जिसके बाद आरोपी फरार हो गया। पीड़िता ने यह भी आरोप लगाया कि आरोपी पक्ष ने उसके पति के साथ ढाबे पर मारपीट की। महिला ने कुछ महिला पुलिस कर्मियों पर भी कार्रवाई न करने का आरोप लगाया है। वहीं पुलिस अधीक्षक से मुकदमा दर्ज कर आरोपी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग की गई है। नांगल थाना पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

बिजनौर में बड़ा हादसा टला, ट्रैक्टर पर गिरा विशाल पेड़

बिजनौर (सब का सपना):- बुधवार को जिले में एक बड़ा हादसा उस समय टल गया, जब सड़क किनारे पेड़ काटने के दौरान अचानक एक विशाल पेड़ पास से गुजर रहे ट्रैक्टर पर गिर पड़ा। घटना के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई और लोगों की भीड़ जमा हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार पेड़ गिरते ही ट्रैक्टर बुरी तरह हिल गया। हालांकि चालक ने सूझबूझ दिखाते हुए समय रहते खुद को सुरक्षित बचा लिया, जिससे बड़ा हादसा टल गया। घटना के बाद आसपास मौजूद लोगों में दहशत का माहौल बन गया। वहीं घटना का वीडियो और तस्वीरें सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही हैं।

अवैध खनन को लेकर उठे सवाल, प्रशासनिक कार्रवाई पर ग्रामीणों ने जताई नाराजगी

नजीबाबाद/बिजनौर (सब का सपना):- लुकादड़ी क्षेत्र में संचालित खनन पट्टे को लेकर एक बार फिर विवाद गहराता नजर आ रहा है। स्थानीय ग्रामीणों और किसानों ने आरोप लगाया है कि पट्टे की निर्धारित सीमा से बाहर खेतों में जेसीबी मशीनों और सैकड़ों डंपरों के जरिए अवैध खनन किया जा रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि कुछ दिन पूर्व इसी खनन पट्टे को लेकर खनन माफियाओं और ग्रामीणों के बीच फायरिंग की घटनाएं भी हुई थीं, जिससे क्षेत्र में दहशत का माहौल बन गया था। इसके बावजूद खनन कार्य लगातार जारी रहने से प्रशासनिक कार्रवाई पर सवाल उठने लगे हैं।
आरोप है कि बिना रॉयल्टी प्रपत्र के बड़े पैमाने पर खनन सामग्री का परिवहन किया जा रहा है। साथ ही खनन पट्टे के प्रवेश और निकासी द्वारों पर सीसीटीवी कैमरे तक नहीं लगाए गए हैं। स्थानीय लोगों ने मामले की उच्च स्तरीय जांच कर अवैध खनन पर तत्काल रोक लगाने की मांग की है। वहीं प्रशासनिक अधिकारियों की ओर से मामले की जांच कर आवश्यक कार्रवाई किए जाने की बात कही जा रही है।

ईद से पहले बड़ा बाजार बेहाल, टूटी सड़क और मलबे से व्यापारी परेशान

स्योहारा/ बिजनौर (सब का सपना):- नगर के बड़ा बाजार में नगर पालिका द्वारा मुख्य सड़क को पुनर्निर्माण के लिए एक माह पूर्व तोड़ दिया गया था, लेकिन अब तक निर्माण कार्य पूरा नहीं हो सका है। टूटी सड़क, अधूरी नालियां और सड़क पर फैले मलबे के कारण व्यापारियों व आम लोगों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। व्यापारियों का कहना है कि सड़क खराब होने से ग्राहकों की आवाजाही प्रभावित हो रही है, जिससे कारोबार ठप पड़ने की स्थिति में पहुंच गया है। साथ ही सड़क पर फैला मलबा हादसों को भी दावत दे रहा है। आरोप है कि कई बार शिकायत के बावजूद निर्माण कार्य में तेजी नहीं लाई गई। अधिशासी अधिकारी के न मिलने पर व्यापारियों ने जनसुनवाई पोर्टल पर शिकायत दर्ज कर जल्द समाधान की मांग की है। व्यापारियों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द सड़क निर्माण और नालियों का कार्य पूरा नहीं कराया गया तो आंदोलन किया जाएगा।

होटलों पर छापेमारी करने वाली टीम पुलिस हिरासत में

नजीबाबाद/बिजनौर (सब का सपना):- जिले में पिछले कई दिनों से होटलों पर कथित छापेमारी और चेकिंग कर दहशत फैलाने वाली टीम आखिरकार नजीबाबाद पुलिस के हत्थे चढ़ गई। शुक्रवार दोपहर नजीबाबाद स्थित राजन होटल में पहुंचे राष्ट्रीय हिंदू एकता संघ भारत के कुछ पदाधिकारियों को पुलिस ने हिरासत में लेकर थाने पहुंचा दिया। बताया जा रहा है कि टीम बिना किसी सक्षम प्रशासनिक अधिकारी या पुलिस बल के होटल में घुसकर पूछताछ और चेकिंग जैसी कार्रवाई कर रही थी। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और पूरे घटनाक्रम को अपने कब्जे में ले लिया। स्थानीय व्यापारियों और होटल संचालकों का आरोप है कि जिले में कई स्थानों पर इसी तरह दबाव बनाकर कार्रवाई का माहौल बनाया जा रहा था। लोगों का कहना है कि खुद को अधिकारी जैसा दिखाकर होटल संचालकों पर दबाव डाला जाता था, जिससे कारोबारियों में भय का माहौल बना हुआ था।
राजन होटल की घटना के बाद पूरे जिले में चर्चा तेज हो गई है। पुलिस अब जांच कर रही है कि संबंधित लोग किस अधिकार से होटल में छापेमारी कर रहे थे और इसके पीछे उनका उद्देश्य क्या था। सूत्रों के अनुसार मामले में वैधानिक कार्रवाई की जा रही है।

पत्नी वियोग में युवक की संदिग्ध मौत, गांव में गम का माहौल

बिजनौर (सब का सपना):- जनपद के थाना क्षेत्र की ग्राम पंचायत सत्तोनंगली के गांव बहादरपुर में एक 30 वर्षीय युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। युवक का शव गुरुवार दोपहर घर के अंदर मिलने से गांव में सनसनी फैल गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजने की तैयारी शुरू कर दी।
मृतक की पहचान गजराज पुत्र खुशीराम के रूप में हुई है। ग्राम प्रधान संदीप कुमार ने घटना की सूचना पुलिस को दी, जिसके बाद थाना प्रभारी संजय कुमार पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे और जांच पड़ताल शुरू की। ग्रामीणों के अनुसार मृतक की पत्नी पूनम करीब पांच माह पहले किसी युवक के साथ चली गई थी और लगभग 15 दिन पूर्व वापस लौटी थी। बताया जा रहा है कि एक सप्ताह पहले वह फिर किसी के साथ घर छोड़कर चली गई। ग्रामीणों का कहना है कि गजराज पत्नी के वियोग और समाज के तानों से परेशान चल रहा था। आशंका जताई जा रही है कि उसने इसी तनाव में आत्मघाती कदम उठाया। थाना प्रभारी संजय कुमार ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद मौत के कारण स्पष्ट हो सकेंगे।

लाखों में हुई चोरी का पुलिस ने कुछ ही घंटों में किया खुलासा, घर का ही निकला चोर

स्योहारा/बिजनौर (सब का सपना):- जनपद के बुढ़नपुर क्षेत्र के ग्राम माहुपुरा में लाखों रुपये के जेवर चोरी होने से हड़कंप मच गया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी। पुलिस ने कुछ ही घंटों में चोरी का खुलासा करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। जानकारी के अनुसार जामिन हुसैन पुत्र बुद्धू खां के घर बीती रात चोरों ने तीन कमरों में रखी अलमारियों से करीब 20 तोला सोना और दो किलो चांदी चोरी कर ली। घटना के समय घर में मौजूद महिलाएं और बच्चे कूलर की हवा में सोते रहे। सुबह जब बड़ी बहू महजवी उठी तो कमरों के दरवाजे खुले मिले और अलमारियों का सामान बिखरा पड़ा था। सास शमशीदा और बहू की चीख-पुकार सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे। घटना की सूचना डायल-112 और थाना स्योहारा पुलिस को दी गई। पुलिस जांच में सामने आया कि चोरी की वारदात घर के ही एक सदस्य द्वारा अंजाम दी गई थी। थाना स्योहारा में तैनात दरोगा उमेश चंद्र और पुलिस टीम ने करीब छह से सात घंटे के भीतर आरोपी को पकड़कर मामले का खुलासा कर दिया। ग्राम माहुपुरा में लाखों रुपये के जेवर चोरी होने के मामले में अब नया मोड़ सामने आया है। पुलिस द्वारा मामले का खुलासा किए जाने के बाद पीड़ित पक्ष ने अपनी तहरीर वापस लेने की बात कही है।
जानकारी के अनुसार पीड़ित परिवार ने पुलिस को एक प्रार्थना पत्र देकर बताया कि वह अब मामले में कोई कानूनी कार्रवाई नहीं चाहता। इसके बाद पुलिस पूरे मामले की वैधानिक प्रक्रिया के तहत जांच कर रही है।
गौरतलब है कि थाना स्योहारा पुलिस ने चोरी की घटना का कुछ ही घंटों में खुलासा करते हुए आरोपी को पकड़ लिया था। जांच में मामला घर के ही व्यक्ति से जुड़ा बताया गया था।

6 सब का सपना
हिंदी दैनिक
बुलन्दशहर/सम्भल
अमरोहा
शनिवार 23 मई 2026
www.sabkasapna.com

मुख्यमंत्री डैशबोर्ड की समीक्षा में डीएम ने दिए सुधार के निर्देश

बुलन्दशहर (सब का सपना):- जनपद में मुख्यमंत्री डैशबोर्ड पर प्रदर्शित कर, करेतर एवं राजस्व विभाग के कार्यों की प्रगति की समीक्षा जिलाधिकारी कुमार हर्ष द्वारा की गई। समीक्षा बैठक में मंडी, बांटमाप, परिवहन, जीएसटी विभाग, गन्ना मूल्य भुगतान, अमृत योजना शहरी, प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी एवं पीएम स्वनिधि सहित विभिन्न योजनाओं की प्रगति पर चर्चा की गई। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि सभी विभागों की श्रेणी ह्यएह्ल से कम नहीं होनी चाहिए। जिन विभागों की रैंकिंग खराब है, वे

कार्ययोजना बनाकर सुधार सुनिश्चित करें। प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी के अंतर्गत किश्त प्राप्त करने के बावजूद निर्माण कार्य न कराने वाले लाभार्थियों की जियो टैगिंग कर नियमानुसार कार्रवाई के निर्देश भी दिए गए। बैठक में सभी उप जिलाधिकारियों को ई-खसरा, एंटी भू-माफिया, कुर्रा बंटवारा, जाति प्रमाण पत्र, कृषक दुर्घटना एवं स्वामित्व योजना की नियमित मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए गए। साथ ही न्यायालयों में तीन वर्ष एवं एक वर्ष से लंबित वादों के शीघ्र निस्तारण तथा आईजीआरएस पोर्टल पर शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित करने को कहा गया।

बैठक में अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व अभिषेक सिंह, अपर जिलाधिकारी प्रशासन प्रमोद कुमार पांडेय सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

थाना प्रभारी भुवनेश कुमार सिंह को भावभीनी विदाई, नीरज शर्मा का जोरदार स्वागत

आहार/बुलन्दशहर (सब का सपना):- जनपद के थाना अहार परिसर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान निवर्तमान थाना प्रभारी निरीक्षक भुवनेश कुमार सिंह को भावभीनी विदाई दी गई, जबकि नवागत थाना प्रभारी निरीक्षक नीरज कुमार शर्मा का फूल-मालाओं के साथ जोरदार स्वागत किया गया। ग्रामीणों व गणमान्य लोगों ने भुवनेश कुमार सिंह के करीब नौ माह के कार्यकाल की सराहना करते हुए

कहा कि उनके कार्यकाल में क्षेत्र में भयमुक्त माहौल रहा। वहीं नवागत थाना प्रभारी नीरज शर्मा को शुभकामनाएं देते हुए बेहतर कानून व्यवस्था की उम्मीद जताई गई।

इस मौके पर समाजसेवी सुभाष चन्द्र शर्मा, मुदस्सिर ठेकेदार, राहुल करण, तेजवीर सिंह, उपनिरीक्षक अनुज कुमार, गयूर अहमद, राहत अली, जयवीर सिंह, दिनेश मलिक, अभिषेक सिंह, मयंक त्यागी, विशाल चौधरी, धर्मेन्द्र कुमार, जयप्रकाश सिंह, राम सुनील कुमार सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

सूखते पेड़ बने किसानों व बागवानों की मुसीबत, कृषि मंत्री से शिकायत के बाद हरकत में अधिकारी

स्याना/बुलंदशहर (सब का सपना):- देश-दुनिया में विख्यात स्याना फलपट्टी क्षेत्र के बागों से चौंसा प्रजाति का आम विलुप्ति की कगार पर है। रोग की वजह से बडे स्तर पर सूख रहे वृक्षों से बागों का कटान जारी है, बाग भी अब खेत नजर आने लगे है, जिससे आम उत्पादकों, बागवानों को आर्थिक हानि झेलनी पड रही है। वहीं आमजन भी चौसा आम के स्वाद को तरस सकता है। मामले की गंभीरता को देखते हुए समाजसेवी हेमंत लोधी द्वारा प्रदेश के कृषि मंत्री से लखनऊ में मुलाकात कर समस्या उठाई गई थी, जिसके बाद कृषि विभाग की टीम तुरंत हरकत में आ गई। पीपीओ (प्लांट प्रोटेक्शन ऑफिसर) अर्चना वर्मा, जिला उद्यान अधिकारी दिनेश अरुण तथा कृषि विज्ञान केन्द्र की वैज्ञानिक डॉ. रिशु सिंह ने हेमंत लोधी की पहल पर स्याना क्षेत्र के बागों का निरीक्षण किया। टीम ने प्रभावित पेड़ों की जांच कर बीमारी के कारणों को समझने का प्रयास किया और किसानों को बचाव एवं रोकथाम के उपाय भी बताए। निरीक्षण के दौरान पूर्व मंत्री के पुत्र एवं समाजसेवी हेमंत लोधी ने अधिकारियों को अवगत कराया कि चौंसा प्रजाति आम के पेड़ दिन-प्रतिदिन सूखते जा रहे हैं। क्षेत्र के बागों में स्थिति बेहद चिंताजनक हो चुकी है। उन्होंने कहा कि यदि समय रहते प्रभावी रोकथाम नहीं की गई तो स्याना फल पट्टी से चौंसा आम को बचाना मुश्किल हो जाएगा। यह केवल किसानों की आय का नहीं बल्कि क्षेत्र की पहचान और प्रतिष्ठा का भी प्रश्न है।

विशेषज्ञों ने किसानों को वैज्ञानिक पद्धति से दवा छिड़काव, जड़ों की देखभाल तथा संक्रमित पेड़ों की निगरानी संबंधी महत्वपूर्ण सुझाव दिए। अधिकारियों ने आश्वासन दिया कि विभाग इस समस्या को गंभीरता से लेकर लगातार निगरानी करेगा और आवश्यक सहायता उपलब्ध कराई जाएगी।

कर्मचारियों की समस्याओं को लेकर भाकियू ने सौंपा ज्ञापन

खुर्जा/बुलंदशहर (सब का सपना):- भारतीय किसान यूनियन अराजनीतिक के कार्यकताओं ने नगर पालिका परिषद खुर्जा पहुंचकर अधिशासी अधिकारी को कर्मचारियों की समस्याओं संबंधी ज्ञापन सौंपा। संगठन ने चेतावनी दी कि 5 मई तक समस्याओं का समाधान न होने पर अनिश्चितकालीन धरना-प्रदर्शन किया जाएगा।

तहसील संरक्षक एवं कर्मचारी संघ अध्यक्ष इंद्रपाल सिंह ने कर्मचारियों के एरियर, बोनस, सामान्य निधि पर ब्याज तथा वेतन-पेंशन का भुगतान हर माह की 5 तारीख तक कराने की मांग उठाई। इस दौरान विजय, रामवीर सिंह गौतम, कैलाश गौतम, इकरार अहमद, प्यारेलाल, केवल राम, कमल सिंह, रामकुमार और सरदार सिंह सहित कर्मचारी व भाकियू कार्यकर्ता मौजूद रहे।

लंबित मामलों के निस्तारण हेतु अगस्त में विशेष लोक अदालत का आयोजन

बुलन्दशहर (सब का सपना):- सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशन में देशभर में सर्वोच्च न्यायालय में लंबित मामलों के सुलह-समझौते के माध्यम से निस्तारण हेतु 21, 22 एवं 23 अगस्त 2026 को विशेष लोक अदालत (समाधान समारोह) का आयोजन किया जाएगा। इस अभियान का शुभारम्भ 21 अप्रैल 2026 से हो चुका है। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, बुलन्दशहर द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि पक्षकार आपसी सहमति एवं वार्ता के माध्यम से अपने मामलों का समाधान करा सकेंगे। इसके लिए सर्वोच्च न्यायालय की वेबसाइट sci.gov.in पर उपलब्ध गूगल फॉर्म भरना अनिवार्य है। आवेदन की अंतिम तिथि 31 मई 2026 निर्धारित की गई है। प्राधिकरण ने अधिवक्ताओं, वादकारियों एवं संबंधित पक्षों से इस समाधान अभियान में सक्रिय भागीदारी की अपील की है। अधिक जानकारी हेतु जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, बुलन्दशहर कार्यालय से संपर्क किया जा सकता है।

पहली बोर्ड बैठक में दिवंगत आत्माओं को दी श्रद्धांजलि

शिकारपुर/बुलंदशहर (सब का सपना):- नगर पालिका परिषद की आयोजित बोर्ड बैठक सांसद प्रतिनिधि विपिन बंसल की मौजूदगी में शुरू होकर श्रद्धांजलि सभा में बदल गई। बैठक में वार्ड 13 के सभासद राजेंद्र सिंह लोधी के पिता हीरालाल, वार्ड 6 की सभासद पुष्पा के ससुर महेंद्र तथा पालिका की सेवानिवृत्त कर्मचारी चंद्रवती के निधन पर दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इसके बाद दिवंगत आत्माओं की शांति की प्रार्थना करते हुए बैठक समाप्त कर दी गई। बैठक की अध्यक्षता चेयरपर्सन राजबाला देवी सैनी ने की।

वृद्धावस्था पेंशन में जन्मतिथि प्रमाण के नए नियम लागू

बुलन्दशहर (सब का सपना):- राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना में आधार कार्ड को जन्मतिथि प्रमाण के रूप में मान्यता समाप्त कर दी गई है।

ग्रामीण क्षेत्रों में अब परिवार रजिस्टर या शैक्षिक प्रमाण पत्र मान्य होंगे, जबकि नगरीय क्षेत्रों में राशन कार्ड, वोटर आईडी, ड्राइविंग लाइसेंस, पासपोर्ट और पैन कार्ड को भी अनुमति दी गई है। नगरीय आवेदकों को स्वघोषणा पत्र देना अनिवार्य होगा। यह जानकारी जिला समाज कल्याण अधिकारी, बुलन्दशहर ने दी।

शिकारपुर थाने में पुलिसकर्मियों की गणना, अनुशासन व कार्यप्रणाली की गई समीक्षा

शिकारपुर/बुलंदशहर (सब का सपना):- पुलिस अधीक्षक ग्रामीण अंतरिक्ष जैन एवं क्षेत्राधिकारी शंशाक श्रीवास्तव ने थाना शिकारपुर में तैनात पुलिसकर्मियों की गणना लेकर उनकी उपस्थिति, अनुशासन एवं कार्यप्रणाली की समीक्षा की। अधिकारियों ने आगामी त्योहारों को शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने तथा

सोशल मीडिया पॉलिसी सहित डीजी परिपत्रों का पालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही रिक्रूट आरक्षियों के प्रशिक्षण व कार्यशैली की समीक्षा करते हुए उन्हें अनुशासन एवं जिम्मेदारी के साथ ड्यूटी करने के लिए प्रेरित किया गया। बाद में थाना परिसर में स्वच्छता अभियान चलाकर साफ-सफाई भी की गई।

अमरोहा एसपी ने किया यातायात व्यवस्था का औचक निरीक्षण, हाईवे पर दौड़ रहे तेज रफ्तार ट्रक को किया सीज

गजरौला/अमरोहा (सब का सपना):- जनपद के गजरौला नगर में एसपी लखन सिंह यादव ने शुक्रवार को यातायात व्यवस्था का औचक निरीक्षण करते हुए नेशनल हाईवे 9 पर नगर क्षेत्र में एक तेज रफ्तार ट्रक एवं ट्रक चालक की अत्यधिक लापरवाही को देखते हुए उसे पकड़ कर सीज कर दिया तथा ट्रक चालक को जमकर फटकार लगाई। बता दें कि एसपी लखन सिंह यादव को ट्रक चालक की इस हरकत से अन्य राहगीरों की सुरक्षा को खतरा महसूस हो रहा था स्थिति की गंभीरता को देखते हुए एसपी लखन सिंह यादव ने तत्काल ट्रक को रुकवाया। उन्होंने मौके पर ही

चालक को फटकार लगाई और उसके विरुद्ध वैधानिक कार्यवाही करते हुए वाहन को सीज करा दिया।इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक ने स्पष्ट निर्देश दिए कि सड़क पर लापरवाही से वाहन चलाकर आमजन के जीवन को खतरे में डालने वालों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही जारी रहेगी। उन्होंने सभी वाहन चालकों से यातायात नियमों का पालन करने और सुरक्षित ड्राइविंग करने की अपील की, ताकि सड़क दुर्घटनाओं पर प्रभावी अंकुश लगाया जा सके।

बकरीद को लेकर चौकी परिसर मे शांति समिति की बैठक का आयोजन

बुगरासी/बुलंदशहर (सब का सपना):- शुक्रवार को बुगरासी चौकी प्रांगण में बकरा ईद के मद्देनजर बैठक का आयोजन कर कस्बे वासियों को दिये दिशा निर्देश दिए गए। सीओ स्याना रामकरन सिंह ने मौजूद जनों को बताया कि सडक पर कोई भी नमाज नही पड़ेगा। कुबार्नी के बाद अवशेषों को गहरा गड्ढा खोदकर दबाना होगा। बिजली पानी की व्यवस्था भी ठीक-ठाक रहेगी। एसडीएम स्याना लालजी विश्वकर्मा

ने भी अपने संबोधन में बताया कि सभी लोग त्यौहार को भाई चारे के साथ मनायेंगे। उन्होंने बिजली के जेई व नगर पंचायत के कर्मचारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि बकरा ईद वाले दिन कोई भी अव्यवस्था बर्दाश्त नही की जायेगी।

एस ओ नरसेना रामकिशोर गौतम व चौकी प्रभारी बुगरासी नीटू मलिक ने भी मौजूद लोगों को संबोधित किया।इस अवसर पर जेई बुगरासी श्री राम सीओ स्याना रामकरन सिंह एसडीएम स्याना लालजी विश्वकर्मा चौकी प्रभारी बुगरासी नीटू मलिक सहित कई दर्जन कस्बे वासी मौजूद रहे।

जिलाधिकारी के निर्देश पर तालाबों और चक मार्गों से हटाया जा रहा अतिक्रमण

चंदौसी/सम्भल(सब का सपना):- जिलाधिकारी अंकित खंडेलवाल द्वारा जनपद में चक मार्गों एवं सरकारी तालाबों पर से अवैध कब्जे हटाने के संबंध में बुधवार को समस्त उप जिलाधिकारियों, तहसीलदारों एवं खंड विकास अधिकारियों के साथ गहन समीक्षा बैठक आयोजित की गई थी। बैठक में जिलाधिकारी ने सभी संबंधित अधिकारियों को सरकारी भूमि, चक मार्गों एवं तालाबों को अतिक्रमण मुक्त कराने के सख्त निर्देश दिए थे। जिलाधिकारी ने 2 हेक्टेयर एवं उससे अधिक क्षेत्रफल वाले तालाबों का चिन्हीकरण कर उनकी सूची तैयार करने के निर्देश भी संबंधित अधिकारियों को दिए हैं, ताकि जल संरक्षण एवं पर्यावरण संतुलन को मजबूत किया जा सके। इसी क्रम में उप जिलाधिकारी चंदौसी नीतू रानी के निर्देशन में तहसीलदार चंदौसी रविन्द्र विक्रम एवं उनकी टीम द्वारा ग्राम पतरौआ में स्थित गाटा संख्या 329-क, लगभग 32 बीघा क्षेत्रफल के तालाब का भौतिक सत्यापन किया गया। निरीक्षण के दौरान पाया गया कि तालाब के कुछ हिस्से में कूड़ा एवं घूर डाला जा रहा था, जिससे तालाब का वास्तविक क्षेत्र प्रभावित हो रहा था। तहसीलदार रविन्द्र विक्रम ने ग्रामवासियों की उपस्थिति में तालाब की पैमाइश कराते हुए संबंधित भूमि को अतिक्रमण मुक्त कराया। साथ ही ग्रामीणों को तालाबों की उपयोगिता, स्वच्छता एवं संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया। तहसीलदार ने कहा कि तालाब जल संचयन के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। वर्षा ऋतु में तालाबों के सुरक्षित एवं संरक्षित रहने से गांवों में जलभराव की समस्या कम होगी तथा वर्षा जल का बेहतर संचयन हो सकेगा। इससे आसपास के क्षेत्रों में स्वच्छता बनाए रखने में भी मदद मिलेगी। जिलाधिकारी अंकित खडेलवाल ने स्पष्ट कहा कि जनपद में तालाबों एवं चक मार्गों पर किसी भी प्रकार का अवैध कब्जा बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। सभी अधिकारियों को नियमित निरीक्षण कर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि तालाबों का संरक्षण जल संरक्षण एवं पर्यावरण संतुलन के लिए अत्यंत आवश्यक है, इसलिए इनके चिन्हीकरण और संरक्षण की कार्रवाई प्राथमिकता के आधार पर की जा रही है।

गंगा एक्सप्रेस-वे पर भीषण हादसा, स्कॉर्पियो-आयशर की टक्कर में युवक की मौत, तीन गंभीर घायल

बहजोई/सम्भल(सब का सपना):- जनपद के बहजोई थाना क्षेत्र अंतर्गत गंगा एक्सप्रेस-वे पर शुक्रवार शाम एक दर्दनाक सड़क हादसा हो गया। भोपाल, मध्य प्रदेश निवासी तीन युवक और एक वाराणसी निवासी अयोध्या जा रहे थे, तभी उनकी स्कॉर्पियो कार की आयशर ट्रक से जोरदार भिड़ंत हो गई। हादसा इतना भीषण था कि स्कॉर्पियो पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई, जबकि आयशर वाहन भी पलट गया। दुर्घटना में एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि तीन अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। जानकारी के अनुसार वरुण चौहान पुत्र प्रेम नारायण (24 वर्ष), पीयूष सिंह पुत्र नागेन्द्र सिंह (22 वर्ष), करन कुशवाह पुत्र नागेन्द्र सिंह (25 वर्ष) निवासी भोपाल, मध्य प्रदेश तथा सिद्धार्थ जायसवाल (28 वर्ष) निवासी बनारस, जो दिल्ली में रहकर अपने दोस्तों के साथ पढ़ाई कर रहा था, निजी स्कॉर्पियो कार से दिल्ली होते हुए अयोध्या जा रहे थे।

बताया जा रहा है कि जब उनकी गाड़ी बहजोई थाना क्षेत्र के गंगा एक्सप्रेस-वे पर 123 प्वाइंट किसौली के पास पहुंची, तभी सामने चल रहे आयशर ट्रक से जोरदार टक्कर हो गई। टक्कर के बाद आयशर वाहन पलट गया तथा उसके दोनों पहियों का जोड़ा अलग होकर सड़क पर फैल गया। वहीं स्कॉर्पियो कार भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। हादसे में सिद्धार्थ जायसवाल की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि अन्य तीन युवक गंभीर रूप से घायल हो गए।

घटना की सूचना मिलते ही बहजोई थाना पुलिस मौके पर पहुंची और राहत एवं बचाव कार्य शुरू कराया। यूपीडा एम्बुलेंस की सहायता से घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बहजोई लाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उनकी गंभीर हालत को देखते हुए हायर सेंटर रेफर कर दिया गया।

समाचार लिखे जाने तक आयशर वाहन में कितने लोग सवार थे तथा उनकी स्थिति क्या है, इसकी जानकारी नहीं मिल सकी थी। हादसे के बाद गंगा एक्सप्रेस-वे पर कुछ समय के लिए यातायात प्रभावित रहा। पुलिस ने क्षतिग्रस्त वाहनों को हटवाकर यातायात सुचारु कराया।

किसानों की यह आमधारणा है कि जितनी अधिक सिंचाई की जायेगी, उतनी ही ज्यादा उपज मिलेगी, किंतु वास्तविकता यह नहीं है. पानी उतना ही लाभदायक है, जितना पौधों की जरूरत है. बाकी जल तो अधिक गहराई तक पौधों की जड़ों की पहुंच से दूर नीचे रिस जाता है और कुछ भाप बनकर उड़ जाता है। रबी की फसलों में सिंचाई का दो तिहाई पानी कच्ची नालियों से रिसकर अन्यथा बहकर नष्ट हो जाता है केवल एक तिहाई भाग पानी ही पौधों को प्राप्त होता है। अत : अगर सिंचाई समयानुसार की जाय तो न केवल सी मिल जल का अच्छा उपयोग होगा, बल्कि ज्यादा क्षेत्रमें भी किसान सिंचाई करके अपने खेत की औसत उपज बढ़ा सकते हैं।

रबी फसलों को पिलाएं संतुलित जल

अधिक सिंचाई से होने वाली हानियाँ- सिंचाई समय से करने पर लाभ होता है किंतु जरूरत से अधिक करने पर पौधों के आवश्यक पोषक तत्व भूमि में रिस कर निचली सतह पर चले जाते हैं जो पौधों को उपलब्ध नहीं होते। इसी **कारण पौधे पीले पड़ने लगते हैं। ऐसा अधिकतर नहर वाले**

मिट्टी में वायु संचार में कमी आ जाती है जिससे पौधे की वृद्धि रुक जाती है।

द्य पौधे पीले पड़ने लगते हैं।

द्य पौधे की बढ़वार रुक जाती है

द्य भूमि में क्षार बढ़ने से ऊसर होने की संभावना है।

द्य अधिक नमी होने के कारण भूमि में पौधों की जड़ों का क्षेत्र घट जाता है जिससे पौधों को पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्वन हीं मिल पाते हैं।

रबी फसलों में महत्वपूर्ण सिंचाई की अवस्थाएं

गेहूं

रबी फसलों में गेहूं को ही सबसे अधिक सिंचाई से फायदा होता है देशी उन्नत जातियाँ या गेहूं की ऊंची किस्मों की जल की आवश्यकता 25 से 30 से.मी. है। इन जातियों **में जल उपयोग की दृष्टि से तीन अवस्थाएं** होती हैं जो क्रमशः कल्ले निकलने की अवस्था (बुआई के 30 दिन बाद), पुष्पावस्था (बुआई के 50 से 55 दिन बाद) और दूधिया अवस्था बुआई के 95 दिन बाद)इन अवस्थाओं में सिंचाई करने से निश्चित उपज में वृद्धि होती है। प्रत्येक सिंचाई में 8 से.मी. जल देना आवश्यक है।

बौने गेहूं की किस्मों को प्रारंभिक अवस्था से ही पानी की अधिक आवश्यकता होती है- क्राउन रुट (शिखर या **शीर्ष जड़ें) और शीर्ष जड़े और** 'झखड़ा जड़ें' निकलते समय।

बुआई के 15-16 दिन तक पौधा बीज में सुरक्षित भोजन पर जीवित रहता है और अपनी खुराक लेता रहता है। **लेकिन इसके बाद बीज का संचित भोजन समाप्त** होने लगता है और तब वह धीरे-धीरे भूमि से खुराक खींचना

निकलती हैं। जिस समय ये जड़ें निकलती हैं, उस समय भूमि की सतह नम होनी चाहिए. ऐसे में बुआई के 20-21 दिन बाद खेत में हल्की सिंचाई करना अत्यंत आवश्यक **होता है। किसानों को यह बात भली-भांति समझना चाहिए कि शिखर जड़ों से पौधों में कल्लों का विकास होता है, जिससे पौधों में बालियां ज्यादा आती हैं और फलस्वरूप उपज अधिक मिलती है। झखड़ा जड़ें पौधों को प्रारंभिक** आधार देती हैं। अतः बुआई के समय हर हालत में खेत में काफी नमी होनी चाहिए. बौनी गेहूं की किस्मों के खेत में पलेवा देकर खेत की तैयारी करने से अच्छा अंकुरण होता है। इन जातियों को 40 से 50 से.मी. जल की कुल आवश्यकता होती है और प्रति सिंचाई 6 से 7 से.मी. जल देना जरूरी है। अगर दो सिंचाई की सुविधा है तो पहली सिंचाई बुआई के 20-21 दिन बाद प्रारंभिक जड़ें निकलने के समय करें दूसरी सिंचाई फूल आने के समय। यदि तीन सिंचाई करना संभव हो तो पहली सिंचाई बुआई के 20-21 दिन बाद (शिखर जड़ें निकलते समय), दूसरी पौधों में गाँठ बनते समय (बुआई के 60-65 दिन बाद) और तीसरी सिंचाई पौधों में फूल आने के बाद करनी चाहिए। जहां चार सिंचाईयों की सुविधा हो वहाँ पहली सिंचाई बुआई के 21 दिन बाद (शिखर जड़ें निकलते समय), दूसरी बुआई के 40-45 दिन बाद (पौधों में कल्ले निकलने के बाद) तीसरी बुआई के 60-65 दिन बाद (पौधों में गाँठ बनते समय) और चौथी सिंचाई फूल आते समय करें. चौथी और पाँचवी सिंचाई विशेष लाभप्रद सिद्ध नहीं होती है। इनको उसी समय करना चाहिए जब मिट्टी में पानी की संचय शक्ति कम हो। बलुई या बलुई दोमट मिट्टी में इस सिंचाई की जरूरत होती है। पांचवीं सिंचाई उस समय करें जब दानों में दूध पड़ जाये। यदि वायुमंडल का तापमान तेजी से बढ़ रहा हो तो छठी सिंचाई हल्की करें। जब दाने में थोड़ी कठोरता नजर आती हो या दूधिया अवस्था बीत गयी हो तो इस सिंचाई को करना बहुत जरूरी नहीं है। परीक्षणों से यही निष्कर्ष निकला है कि यदि 6 सिंचाईयां की जायें तो बौने गेहूं से अधिकतम उपज मिलती है। लेकिन यदि 6 सिंचाईयाँ संभव न हो तो उपयुक्त समय पर उक्त तीन सिंचाईयां तो अवश्य ही करनी चाहिए। पिछेती गेहूं में पहली 5 सिंचाईयां 15 दिनों के अंतर से करें। फिर बालें निकलने के बाद यह अन्तर 9-10 दिन का रखें। पिछेती गेहूं की दैहिक अवस्था पिछड़ जाती है और बालें निकलना और दानों का विकास तो ऐसे समय पर **होता है जब वाष्पीकरण तेजी से होता** है और ऐसी दशा में **खेत में नमी की कमी का दानों के** विकास पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है, फलस्वरूप दाना सिकुड़ जाता है। इसीलिए देर से बोये गए गेहूं में जल्दी सिंचाई कम दिनों के अंतर से जरूरी है।

सरसों की ओरोबंकी

ओरोबंकी :- ओरोबंकी या आग्या (ब्रुमरेप) की जातियाँ पूर्ण रूप से मूल परजीवी होती हैं। यह विभिन्न फसलों पर आक्रमण करती हैं जिसमें सरसों, बैंगन, टमाटर, तम्बाकू, फूलगोभी, पत्तागोभी, शलजम और कई सोलोनेसी तथा कुसीफेरी कुल के **पौधें शामिल हैं। सरसों, तोरिया, राया फसलों पर ओरोबंकी इजिप्टिका का आक्रमण सबसे** पहले राजस्थान के अलवर, भरतपुर, सवाई माधोपुर क्षेत्र में देखा है। ओरोबंकी सेरनुआ एक दूसरी पर जाति है जोकि बिहार क्षेत्रों में सरसों की फसल पर परजीवी है। सरसों की फसल में इसके प्रकोप से 10 से 70 **प्रतिशत** तक हानि हो सकती है। यह परजीवी सरसों उगाये जाने **वाले सभी क्षेत्रों में जैसे - राजस्थान, उत्तरप्रदेश,** बिहार, मध्यप्रदेश, **पंजाब, हरियाणा, पश्चिम बंगाल एवं उड़ीसा में** पाया जाता है।

लक्षण :- ओरोबंकी से ग्रस्त सरसों के पौधे छोटे रह जाते हैं **और** कभी-कभी मर भी जाते हैं ओरोबंकी के चूषकांग (हास्टोरिया) सरसों की जड़ों में घुस कर पोषक तत्व प्राप्त करते है। सावधानी से उखाड़ कर देखें तो पता चलता है कि ओरोबंकी की जड़ें सरसों की जड़ों के अंदर घुसी हुई दिखती है। सरसों के पौधें के नीचे मिट्टी से निकलते हुये ओरोबंकी परजीवी दिखाई पड़ते हैं।

नियंत्रण के उपाय

1. नये क्षेत्रों में बीज का प्रवेश नहीं होने देना चाहिये तथा परजीवी के बीज रहित सरसों के शुद्ध बीज का उपयोग करना चाहिये। 2. ओरोबंकी परजीवी को हाथ से उखाड़ कर या सावधानी से साधारण कसी से निराई-गुड़ाई द्वारा जमीन के ऊपर के तने को काटकर बीज बनने से पहले ही नष्ट कर देना चाहिये।
3. यदि बीज बन गये हों तो पौधों को सावधानी से निकालना चाहिये जिससे बीज भूमि में नहीं मिलें।
4. जिन क्षेत्रों में बहुत अधिक प्रकोप होता है वहां सरसों की फसल ट्रेप क्रोप के रूप में बोनी चाहिये। 30 से 40 दिन में परजीवी के पौधे बाहर निकलते दिखाई दें तो नवम्बर के अंत में गहरी जुताई करके सरसों सहित इसके भूमिगत तने को नष्ट कर देना चाहिये। इसके बाद अन्य फसल बो देना चाहिये।
5. जब तक इसका पूर्ण नियंत्रण नहीं हो जाता सरसों के स्थान पर अरण्डी की फसल बोयें, क्योंकि अरण्डी एक वर्षीय फसल है इससे परजीवी को रोकने में मदद मिलेगी।
6. कुछ पौधों जैसे मिर्च के बोने से ओरोबंकी के बीजों का अंकुरण हो जाता है लेकिन मिर्च की फसल पर इस परजीवी से कोई नुकसान नहीं होता है। इस प्रकार भूमि में मौजूद ओरोबंकी के बीजों को अंकुरित कर इस फसल का ट्रेप फसल के रूप में प्रयोग कर परजीवी के पौधों को नष्ट किया जा सकता है। इस प्रकार मिर्च, सरसों फसल चक्र अपनाने से इस परजीवी का प्राकृतिक रूप से नियंत्रण हो जायेगा।
7. लम्बे समय तक फसल चक्र अपनाकर इसकी उग्रता को रोका जा सकता है।
8. पौधों की भूमि की सतह के पास 25 प्रतिशत ताम्र घोल का छिड़काव करने से परजीवी नष्ट किये जा सकते हैं।
9. ओरोबंकी पौधों पर सोयाबीन के तेल की 2 बूंदे डाल देने से पौधा मर जाता है।
10. सरसों की आग्या रोगरोधी किस्म दुर्गामणि की बुवाई करें।

पशुओं का स्वास्थ्य प्रबंधन

गलघोंटू- यह **बीमारी पाश्चुरेल्ला** मल्टोसिडा नामक जीवाणुओं के प्रकोप से होती हैं।

लक्षण- इस बीमारी से ग्रसित पशु को तेज बुखार (106 से 108 डिग्री सेल्सियस तक) हो जाता हैं मुंह से बहुतायत में लार बहती हैं, सिर में तथा अगले दोनों पैरों के बीच दुखदायी सूजन, पेटशूल तथा भूख न लगना, साँस लेने में तकलीफ, खून भरे दस्त, आंखों में सूजन, जीभ बड़ी तथा लाल होना, गिटकने में कठिनाई आदि लक्षण दिखाई देते हैं।

बचाव:- बरसात से पूर्व गलघोंटू रोग विरोधी टीका ऑइल ॲडज्युव्हंट- वैक्सीन जिस पशु का शरीर भार 150 कि.ग्रा. तक हैं उन्हें लगवायें। जिन पशुओं का शरीर भार 150 किलो से ज्यादा **हैं उन्हें ॲलम प्रेसिपिटेटेड वॅक्सीन** 5 से 10 मिली त्वचा के नीचे लगवायें। टीकाकरण करने से पशु के शरीर में एक वर्ष तक इस रोग विरोधी शक्ति बनी रहती हैं। टीकाकरण न करने पर पशु की मृत्यु हो सकती हैं।

जहरी बुखार- इसे अंग्रेजी भाषा में ॲथ्रेक्स कहते हैं तथा ये बॅसिलस ॲथ्रॅसिस नामक जीवाणुओं के प्रकोप से होता हैं।

लक्षण- पशु को तेज बुखार होता है, पेट फूल जाता हैं, सभी प्राकृतिक छिद्रो से यानि नॉक, मुंह, योनी द्वार, गुदद्वार, कान से गहरे काले रंग का खून बहता हैं जो जमता नहीं हैं यह इस बीमारी का प्रमुख लक्षण हैं। बीमारी बढ़ने पर पशु की मृत्यु हो जाती हैं।

बचाव- बरसात से पहले इस रोग विरोधी टीका ऑरी अंथ्रंक्स सीरम **और साथ ही ब्रॉड स्पेक्ट्रम प्रति जैविक अंटीसीरम 100 से 350** मि.ली नस में लगवायें।

लंगड़ा रोग- अंग्रेजी में इस रोग को ब्लॅक क्वार्टर नाम से जाना जाता **हैं तथा यह क्लोस्ट्रीडियम शोव्हाय** नामक जीवाणुओं के प्रकोप से होता हैं.

लक्षण- पशु को तेज बुखार होता हैं, पुट्ठों पर विशेषकर पिछले पुट्ठे पर तथा शरीर में सूजन पैदा हो जाती है। पुट्ठों पर जो सूजन पैदा होती हैं उसे दबाने पर करकर जैसी आवाज आती हैं क्योंकि उसमें **जीवाणु गैस (वायु) पैदा करते** हैं।

बचाव - बरसात से पूर्व इस रोग विरोधी टीका (अंटीसीरम) 200 से 400 मिली नस में लगवायें।

उपाय- पेनीसिलीन, सिप्रोफ्लोक्सासीन तथा नॉर फ्लोक्सासीन जैसे **प्रति जैविक इस रोग को नियंत्रण करने में काफी** प्रभावशाली पाये गये हैं। लेकिन पशुओं को इस रोग की बाधा होती ही नहीं चाहिए इसलिये इस रोग विरोधी टीका बरसात से पहले अवश्य लगवा लें.

खुरपका-मुंहपका रोग- इसे अंग्रेजी भाषा मे फूट अंड माउथ डिसीज कहते हैं क्योंकि इस रोग से ग्रसित पशु के पैर तथा मुंह दोनों ज्यादा प्रभावित होते हैं.

लक्षण- इस रोग से ग्रसित पशु को तेज बुखार (104 से 106 डिग्री सेल्सियस तक) हो जाता हैं। पशु के मुंह में छाले हो जाते हैं जो बाद में फूट जाते हैं और वहाँ जख्म बन जाते हैं। इससे पशु के मुंह से लगातार चिपचिपी लार टपकती रहती हैं जो गाढ़ी होती हैं और मुंह से जमीन तक तार के माफिक टपकती रहती हैं। पशु के मुंह में दर्द होने से वह कुछ भी खा नहीं सकता अतः कमजोर हो जाता हैं। इसी प्रकार उसके खुरों के बीच भी फोड़े बन जाते हैं जो बाद में फूटकर वहां भी जख्म बन जाते हैं। पशु को काफी दर्द होने से वह चल-फिर नहीं सकता। अतः चराई नहीं कर सकता। जिससे वह और भी कमजोर हो जाता हैं।

रोग के बढ़ने पर मुंह तथा खुर पैर टेढ़े हो जाते हैं. देशी जातियों की गायों की इस रोग-विरोधी शक्ति संकर तथा विदेशी पशुओं की अपेक्षा ज्यादा होने से वह मरती नहीं हैं लेकिन शरीर में विकृतियाँ जैसे मुंह **तथा खुर टेढे होना मुंह के भीतर के दाँत गिर जाना** आदि नुकसान तो निश्चित होते ही हैं.

उपाय- बचाव: यह रोग विषाणु जन्य होने के कारण इस रोग का कोई उपाय नहीं हैं। रोग होने पर प्रति जैविक देना चाहिए लेकिन पशुओं को यह रोग होना ही नहीं चाहिए इसलिये बरसात से पूर्व इस रोग-विरोधी टीका क्वाड्री -व्हॅलंट फील्ड,वॅक्सीन चमड़ी के नीचे **लगवाना चाहिए। यह वर्ष में दो बार लगवायें।** यह करवाने से हम **अपने अमूल्य पशुधन को इस बीमारी से** बचाये रख सकते हैं। अतः टीकाकरण अवश्य करवायें।

टिकाऊ खेती आज की आवश्यकता

जनसंख्या एवं खाद्यान्न उत्पादन

भारत की जनसंख्या 2001 की जनगणना के अनुसार 102.7 करोड़ को छू चुकी है जो 1991-2000 तक 1.9 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि **में रही, जबकि खाद्यान्न उत्पादन 2003-04 में 213.5 मिलियन टन तक पहुंचा अर्थात्** 2.1 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर से.

इन आंकड़ों को प्रस्तुत करने से तात्पर्य है कि खाद्यान्न में यह वृद्धि से अधिक रही है जो कि संतोषजनक स्थिति है और अभी तो भोजन पेट भर मिल रहा है **लेकिन प्रश्न यह उठता है कि क्या 2025 में हमें पेट भर भोजन प्राप्त होगा? अगर नहीं तो हम आगे क्या करेंगे?**

हमें आगे भी 21वीं सदी के बाद से खाद्यान्न में लगभग 25-30 **प्रतिशत की वृद्धि कायम रखनी** होगी अन्यथा पूरा देश हमारा सूखा घोषित हो जायेगा जिससे की लगभग 14 प्रतिशत उत्पादन में **गिरावट होगी जो भविष्य के लिए प्रगति** के उत्तम संकेत नहीं हैं.

भूमि-जल पर्यावरण

खेती में उर्वरकों, कीटनाशकों शाकनाशियों अर्थात् रसायनों के अत्यधिक प्रयोग में भूमि की दशा निश्चय ही खराब हुई है. जिससे की भूमि के लाभदायक कीट, केंचुए, जीवाणु इत्यादि नष्ट हुए हैं, साथ ही साथ सूक्ष्म तत्वों में भी भारी कमी हुई. अतः जीवांश खादों के प्रयोग से हम रोक सकते हैं फसल चक्र अपना सकते हैं उर्वरकों का संतुलित प्रयोग कर सकते हैं कई जंगल भी नष्ट किये गये **सघन पद्धतियों के प्रयोग के कारण** जिससे पर्यावरण संतुलन बिगड़ा है अर्थात् इसका दोहन कम किया जाए एवं इन्हें संरक्षित किया जाने का प्रयास करना नितांत आवश्यक है.

लाभ/खर्च अनुपात

हमारी बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए खाद्यान्न की उपलब्धि बनाये रखने के लिए सस्य रसायनों का **प्रयोग निरंतर बढ़ता ही जा रहा है. जिससे** की हमारी भूमि में मृदा में तथा मृदा के गुणों पर हानिकारक प्रभाव पड़ रहा है. यदि यह प्रक्रिया लंबी अवधि तक चलती रही तो भूमि एवं जल की उपादेयता समाप्त हो जायेगी और नई पीढ़ी का जीवन ही असुरक्षित हो जायेगा वर्तमान में हमारे देश की जनसंख्या दिनों-दिन बढ़ रही है और कृषि क्षेत्र बराबर कम होता जा रहा है. ऐसी परिस्थिति में हम **टिकाऊ खेती का** प्रयोग करना अत्यंत **आवश्यक है** तथा जिसके अंतर्गत **प्राकृतिक संसाधनों** का इसका इस प्रकार **से प्रयोग किया** जाए कि वर्तमान व भविष्य दोनों में संतुलन हो. इस प्रकार की खेती का प्रयोग करके हम अपने भविष्य की पीढ़ी को सुरक्षित तो कर रही है बल्कि हमें प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा एवं सुरक्षा करके या उन्हें सुरक्षित बनाये रखने का कर्त्तव्य भी पूरी तरह निभा रहे हैं. अर्थात् हमें टिकाऊ खेती का प्रयोग किया जाना चाहिए. जिसके द्वारा हमें आर्थिक लाभ एवं भारत सरकार को पूर्णतः उत्पादन से लाभ प्राप्त हो सके.

कृषि क्षेत्र में सम्पन्नता लाने के लिए उत्पादकता टिकाऊपन तथा समानता की बहुत जरूरत है हमें भारत में भी बदलते पर्यावरण में कृषि निर्वाह की प्राथमिकता देनी अनिवार्य आवश्यकता है. इसका मुख्य उद्देश्य भविष्य में हम आर्थिक दृष्टि से कारगर, पर्यावरण की दृष्टि त्रुटीहीन सामयिक दृष्टि से सुसंगत प्रौद्योगिकी जो कम लागत पर अधिक से अधिक कृषि उत्पाद दे सकें.

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि टिकाऊ खेती मानव जाति को निरंतर खुशहाली प्रदान का वचन देती है.

टिकाऊ खेती का महत्व

टिकाऊ खेती का महत्व सबसे अधिक वर्तमान खेती की प्रणालियों, तरीकों एवं समस्याओं को सुधारने में है. टिकाऊ खेती मुख्य रूप से प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा से जुड़ी हुई हैं मृदा, जल, ऊर्जा, वन-विकास एवं जंगली पशुओं की सुरक्षा या इन्हें सुरक्षित रखने से है. टिकाऊ खेती में इनके प्रबंधन पर विशेष प्रकार से ध्यान दिया जाता है. **कई प्रकार की उत्पन्न समस्याओं जैसे- सौर ऊर्जा का उचित प्रयोग, वातावरण प्रदूषण की रोकथाम पर्यावरण का संतुल**न डगमगाना इत्यादि समस्याओं पर विशेष रूप से ध्यान देना ही इसमें निम्न विषय है अर्थात् भविष्य में टिकाऊ खेती के माध्यम से इन समस्याओं को सुधारने का प्रयास किया जा रहा है.

टिकाऊ खेती का लाभ

- पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन बनाये रखने में टिकाऊ खेती का प्रमुख कार्य है.
- वातावरणीय प्रदूषण कम होता है.
- **लगाई फसलों की उत्पादन लागत कम आती है.**
- **प्राकृतिक संसाधनों का दोहन** उचित प्रकार से करते हैं.
- टिकाऊ खेती में भूमि, जल, ऊर्जा इत्यादि प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग हम इस प्रकार से करते हैं कि भविष्य में आने वाली पीढ़ियां इसका **प्रयोग एवं दोहन ध्यान रखकर** कर सकें.

घोस्ट डायरेक्टिंग पर बोले आमिर खान

आमिर खान को बॉलीवुड का 'मिस्टर परफेक्शनिस्ट' कहा जाता है। फिल्मों में उनकी गहरी दिलचस्पी और हर छोटी-बड़ी चीज पर ध्यान देने की आदत की वजह से अक्सर ऐसी अफवाहें उड़ती रही हैं कि वह अपनी फिल्मों को पर्दे के पीछे से खुद डायरेक्ट करते हैं। लेकिन अब आमिर खान ने इन सभी खबरों पर खुलकर जवाब दिया है। हाल ही में स्क्रीन एकेडमी इवेंट के दौरान आमिर खान ने साफ कहा कि अपने 38 साल के करियर में उन्होंने सिर्फ एक ही फिल्म डायरेक्ट की है और वह 'तारे जमीन पर' है। बाकी फिल्मों को लेकर जो 'घोस्ट डायरेक्टिंग' की बातें होती हैं, वह पूरी तरह गलत हैं।

आमिर ने कहा, 'मीडिया ने हमेशा कहा कि मैं फिल्मों को पर्दे के पीछे से डायरेक्ट करता हूं। लेकिन ऐसा क्यों करूंगा मैं? अगर मैं इतना अच्छा काम कर रहा हूं तो किसी और का नाम क्यों दूंगा? क्या मुझे पागल कुत्ते ने काटा है?' उन्होंने आगे कहा कि उन्हें अपने करियर में कई शानदार डायरेक्टर्स के साथ काम करने का मौका मिला, जिनसे उन्होंने बहुत कुछ सीखा। आमिर का मानना है कि हर निर्देशक अपनी अलग सोच और स्टाइल लेकर आता है और यही वजह है कि उनकी फिल्में एक-दूसरे से बिल्कुल अलग दिखाई देती हैं। आमिर ने उदाहरण देते हुए कहा कि 'लगान', 'रंग दे बसंती', 'सरफरोश' और '3 इडियट्स' जैसी फिल्मों का अंदाज और कहानी अलग-अलग है, क्योंकि हर फिल्म के पीछे अलग निर्देशक की सोच थी। उन्होंने यह भी कहा कि फिल्मों की सफलता सिर्फ एक इंसान की नहीं होती, बल्कि पूरी टीम की मेहनत का नतीजा होती है। आमिर ने बताया कि उन्होंने 'तलाश', 'रंग दे बसंती' या 'तारे जमीन पर' की कहानी नहीं लिखी थी। उन्हें बस ये कहानियां पसंद आईं और वह उनका हिस्सा बनना चाहते थे।

वर्कफ्रंट की बात करें तो आमिर खान आखिरी बार 'सितारे जमीन पर' में नजर आए थे। आने वाले समय में वह राजकुमार हिरानी की '3 इडियट्स' के सीक्वल में दिखाई दे सकते हैं।

इश्क दम और इडली रसम खाना, परिवार और भावनाओं की खूबसूरत कहानी

अभिनेत्री सुरभि चंदना अपनी नई वेब सीरीज 'इश्क दम और इडली रसम' को लेकर उत्साहित हैं। खास बात है कि इस सीरीज को उन्होंने को-प्रोड्यूस भी किया है। अभिनेत्री ने अपकमिंग वेब सीरीज को परिवार, प्यार, भावनाओं और सांस्कृतिक विरासत का जश्न मनाने वाली एक दिलकश कहानी बताया है। बालाजी टेलीफिल्म्स निर्मित यह शो दर्शकों को एक पुराने साउथ इंडियन रेस्टोरेंट की भावुक कहानी के माध्यम से खाने की खुशबू, यादों और रिश्तों की गहराई दिखाएगा। शो की कहानी एक पुराने साउथ इंडियन रेस्टोरेंट के इर्द-गिर्द घूमती है, जो टिके रहने के लिए संघर्ष कर रहा है। इस सीरीज के केंद्र में मीरा नायर हैं, जिनका किरदार शाइनी दोशी ने निभाया है। मीरा एक भावुक शेफ है, जो मानती है कि खाना सिर्फ खाना नहीं, बल्कि सेवा, सुकून और जिम्मेदारी है। अपने दिवंगत पिता की विरासत को संभालते हुए वह रेस्टोरेंट को सिर्फ एक बिजनेस नहीं, बल्कि अपनी भावनाओं और मूल्यों का हिस्सा मानती है। कहानी आगे बढ़ती है और अभिषेक कुमार के निभाए किरदार अर्जुन ठाकुर की एंट्री होती है, जो एक शेफ और इन्वेस्टर हैं। जब वह मीरा के रेस्टोरेंट में आता है, तो मीरा की दुनिया हिल जाती है। अर्जुन रेस्टोरेंट को फिर से खड़ा करने का वादा करते हैं, लेकिन साथ ही मीरा की उन सारी चीजों को बदलने का खतरा भी पैदा करते हैं जो उनके दिल के सबसे करीब हैं।

सुरभि ने इसे अपने करियर का नया अध्याय बताया और कहा कि वह आगे बढ़ते रहना चाहती हैं। सुरभि चंदना ने शो के बारे में बात

करते हुए बताया, ''इश्क दम और इडली रसम' बालाजी टेलीफिल्म्स के साथ काम करना मेरे लिए सपने के सच होने जैसा है। यह शो मेरे लिए बहुत खास है क्योंकि इसमें दिल, अपनापन और सादगी भरपूर है। शुरुआत से ही मुझे इस प्रोजेक्ट से गहरा जुड़ाव महसूस हुआ। कैमरे के पीछे क्रिएटिव जर्नी का हिस्सा बनना और कहानी से भावनात्मक रूप से जुड़ना मेरे लिए बेहद खूबसूरत अनुभव रहा है। यह शो प्यार, परिवार, भावनाओं और संस्कृति का ताजगी भरे अंदाज में जश्न मनाता है।' वहीं, अभिषेक कुमार ने अपने किरदार अर्जुन ठाकुर के बारे में बात करते हुए कहा, 'यह कोई आम लव स्टोरी या टिपिकल शेफ ड्रामा नहीं है। यहां खाना लोगों की भावनाओं, नियंत्रण और अतीत को समझने का जरिया है। अर्जुन उन सबसे मुश्किल किरदारों में से एक है जिन्हें मैंने निभाया है। यह किरदार गंभीर, नियंत्रित और भावनाओं को छुपाने वाला है। इस शो के जरिए मुझे एक अभिनेता के रूप में आगे बढ़ने का मौका मिला है।' शो में शाइनी दोशी, अभिषेक कुमार के अलावा नेहा लक्ष्मी अय्यर, अमन सिंह, प्रेरणा सहगल, विजया लक्ष्मी गुरव और करण खन्ना भी अहम भूमिकाओं में हैं।

एक एक्टर के तौर पर आप फिल्म को सिर्फ अपनी नहीं मान सकते, यह पूरी टीम की होती है

'टॉक्सिक' पहले यह फिल्म मार्च में रिलीज होने वाली थी, फिर इसे जून के लिए शिफ्ट किया गया था। लेकिन अब इसकी कोई फाइनल रिलीज डेट अभी तक घोषित नहीं की गई है। इसपर अब तारा सुतारिया ने भी अपने विचार रखे हैं।

यश स्टारर इस पैन-इंडिया फिल्म को लेकर बताया गया था कि मिडल ईस्ट में चल रहे हालात की वजह से रिलीज प्लान में बदलाव करना पड़ा। बाद में यह भी साफ किया गया कि फिल्म पूरी तरह बनकर तैयार है, लेकिन टीम अभी इसकी ग्लोबल रिलीज और बड़े डिस्ट्रीब्यूशन पार्टनर्स को फाइनल करने में लगी हुई है, ताकि फिल्म को दुनिया भर में सही तरीके से रिलीज किया जा सके। इसी बीच फिल्म की एक्ट्रेस तारा सुतारिया ने बातचीत में इस देरी पर अपना रिएक्शन दिया है। उन्होंने कहा कि वह इस पूरी स्थिति को बहुत समझदारी से देखती हैं। तारा ने एक इंटरव्यू में कहा, 'मैं बहुत पेशेंस रखती हूं। मैं ये नहीं सोचती कि अगर फिल्म तुरंत रिलीज नहीं हुई तो क्या होगा। एक एक्टर के तौर पर आप फिल्म को सिर्फ अपनी नहीं मान सकते, यह पूरी टीम की होती है।' उन्होंने आगे कहा कि कई बार बड़े फैसलों के पीछे सही वजहें होती हैं, जिन्हें प्रोड्यूसर्स और डायरेक्टर्स बेहतर समझते हैं। तारा ने यह भी कहा कि वह दर्शकों की एक्साइटमेंट को समझती हैं और खुद भी फिल्म का इंतजार कर रही हैं, लेकिन उनका मानना है कि यह इंतजार फिल्म के लिए फायदेमंद साबित होगा और इसे ग्लोबली बेहतर रिस्पॉन्स मिलेगा।

अब यश के फैंस बेसब्री से फिल्म की नई रिलीज डेट का इंतजार कर रहे हैं। इस फिल्म में कियारा और यश के अलावा नयनतारा, हुमा कुरैशी, तारा सुतारिया और रुक्मिणी वसंत जैसे कलाकार हैं। इसमें यश डबल रोल में होंगे।

असली फेमिनिज्म वही, जहां पुरुष अपनी महिला को पहचान बनाने का पूरा मौका दे

टेलीविजन की मशहूर अभिनेत्री रुबिना दिलैक ने हाल ही में नारीवाद और रिश्तों में पुरुष व महिला ऊर्जा के संतुलन पर अपनी राय रखी। उनका कहना है कि असली नारीवाद (फेमिनिज्म) तभी संभव है, जब एक पुरुष अपनी साथी को अपनी पहचान बनाने और आगे बढ़ने का पूरा मौका दे।

खास बातचीत में रुबिना ने कहा, 'जब तक कोई पुरुष अपनी महिला की पहचान को खिलने का मौका नहीं देता, तब तक हम फेमिनिज़्म के बारे में चाहे कितनी भी जोर से क्यों न बात कर लें, यह मुमकिन नहीं है।' उन्होंने इसे आध्यात्मिक नजरिए से भी समझाया। रुबिना ने कहा कि जैसे शक्ति और शिव की ऊर्जा मिलकर संतुलन बनाती है, वैसे ही रिश्तों में भी पुरुष और महिला दोनों की भूमिकाएं बराबर अहम होती हैं। जब शक्ति को अपनी ताकत दिखानी होती है, तब वह सामने आती है और जब शिव को अपनी पुरुष ऊर्जा दिखानी होती है, तब वह नजर आती है। यही दोनों शक्तियों का खूबसूरत संतुलन है।

रुबिना ने आगे बताया कि रिश्तों में समय के साथ कई बदलाव आते हैं। कभी एक साथी अपने सपनों को पूरा करने में लगा होता है, तो दूसरा उसका साथ देता है। उन्होंने अपने पति अभिनव शुक्ला का उदाहरण देते हुए कहा कि जिंदगी में कुछ समय ऐसा होगा जब अभिनव अपने काम और सपनों पर ध्यान देंगे और वह उनका साथ देंगी। वहीं कुछ समय ऐसा भी आएगा जब वह अपने सपनों को पूरा करेंगी और अभिनव उनका साथ करेंगे। उन्होंने कहा, 'जब आप इस बात को समझते हैं, तो इससे परिवार के लिए एक मजबूत वैल्यू सिस्टम बनता है।' रुबिना जल्द ही टीवी के चर्चित रियलिटी शो खतरों के खिलाड़ी के 15वें सीजन में नजर आने वाली हैं। शो की शूटिंग के लिए वह जल्द ही दक्षिण अफ्रीका के केप टाउन रवाना होंगी। रुबिना ने यह भी बताया कि अपनी जुड़वां बेटियों से 40 दिनों तक दूर रहना उनके लिए एक मां के तौर पर काफी मुश्किल होने वाला है। उन्होंने कहा कि बच्चों से दूर रहकर उनके गले लगने और प्यार को मिस करना आसान नहीं होगा।

मैं नेपो किड नहीं हूं

कभी बॉलिवुड सिलेब्स के साथ फोटो खिंचवाकर चर्चा में आए ओरहान अवात्रामणि उर्फ ओरी आज खुद एक सोशल मीडिया स्टार बन चुके हैं। वहीं, अब जल्द ही वह टीवी के मशहूर रिएलिटी शो खतरों के खिलाड़ी के 15वें सीजन में खतरों से खेलते हुए भी दिखेंगे। ऐसे में, जब हमने ओरी से इस शो में भागीदारी की वजह जाननी चाही तो उनका जवाब चौंकाने वाला था। ओरी का कहना है कि बहुत समय से उन्हें खुशी, दुख, दर्द, भय कोई भी इमोशन महसूस नहीं होता, इसलिए उन्होंने इस शो को हां कहा ताकि वे शो के चुनौतीपूर्ण टास्क के दौरान वापस जिंदा महसूस कर सकें।

काफी समय से बहुत डिप्रेशन में हूं

बकौल ओरी, 'मैं जिस तरह की जिंदगी जीता हूं, उसमें मैं हर तरह से अहसास के प्रति डीसेंसिटाइज यानी संवेदनहीन हो चुका हूं। मैं चाहे नई गाड़ी ले लूं, बैग ले लूं, हॉलिडे पर चला जाऊं, मुझे कोई भी चीज एक्साइट नहीं करती। मैंने खतरों के खिलाड़ी 15 के लिए इसलिए हां कहा, क्योंकि मैं जिंदगी को महसूस करना चाहता हूं। मैं फिर जिंदा महसूस करना चाहता हूं। मैं काफी समय से बहुत ही डिप्रेस्ड (अवसादग्रस्त) रहा हूं। मुझे बहुत अजीब लगता है, जब मैं बाहर जाता हूं और मेरे इतने सारे फैंस मुझे सिर्फ देखकर इतने उत्साहित होते हैं। मतलब मेरे जैसे खुद अवसाद में जी रहे इंसान के लिए यह विडंबना ही है। लेकिन सोशल मीडिया पर तो ओरी बहुत खुशमिजाज लगते हैं? इस पर वह कहते हैं, 'आपको दुनिया के सामने अपना बेस्ड साइड ही दिखाना पड़ता है। आप वहां ऐसी पिक्चर्स नहीं पोस्ट कर सकते जिसमें खुश न हों पर मैंने बहुत समय से कुछ महसूस नहीं किया है।'

खुशी, दुख, उत्साह कुछ महसूस नहीं होता

क्या ओरी को जिंदगी में किसी चीज से डर लगता है? यह पूछने पर वह कहते हैं, 'नहीं, वही तो मैं कह रहा हूं कि मुझे याद नहीं आता कि आखिरी बार कब मैंने कोई भी फीलिंग महसूस किया था। खुशी, गुस्सा, दुख, उत्साह, कोई भी अहसास। कई बार मुझे खुद को याद दिलाना पड़ता है कि मुझे कुछ महसूस करना है। इसके लिए मुझे खुद पर बहुत जोर डालना पड़ता है।

सांस भी लेता हूं तो लोग जज करते हैं

ओरी को सोशल मीडिया पर पॉपुलैरिटी और ट्रोलिंग दोनों भरपूर मिली है। उन्हें काफी जज भी किया जाता है। वह कहते हैं, 'मुझे दोनों ही चीजों से फर्क नहीं पड़ता। मैं कोई नेपो किड नहीं हूं। मैं फेमस पैदा नहीं हुआ हूं। मैंने अपनी प्रसिद्धि कमाई है तो अगर मैं पहले इसके बिना रहा हूं तो बाद में भी रह सकता हूं। रही बात जजमेंट की तो लोगों ने मुझे हर वक्त जज किया है, इसलिए मैं उसके प्रति भी पूरी तरह डीसेंसिटाइज हो चुका हूं। मुझे फर्क ही नहीं पड़ता क्योंकि मैं कुछ भी करूं लोग मुझे जज ही करते हैं। मैं घर से बाहर निकलता हूं और जज होता हूं।

मेरा सारा के साथ कोई विवाद नहीं है

पिछले दिनों ओरी का उनकी खास दोस्त सारा अली खान के साथ विवाद भी सुर्खियों में रहा। इस बारे में ओरी बताते हैं, 'मेरा सारा के साथ कोई विवाद नहीं है। मेरा विवाद उसकी मां अमृता सिंह के साथ है, मगर मैं सारा के साथ दोस्त होने का दिखावा नहीं कर सकता, जबकि उसकी मां ने मेरे साथ इतना गलत किया। मैंने यही कहा है कि जो अमृता ने मेरे साथ किया, वो ठीक नहीं था और जब तक वो माफी नहीं मांगती, मैं सारा अली खान के साथ दोस्ती का दिखावा नहीं कर सकता। वरना सारा के साथ मेरी कोई बैर नहीं थी। उन्होंने अभी तक कोई माफी नहीं मांगी है। मैं अब भी इंतजार कर रहा हूं।'

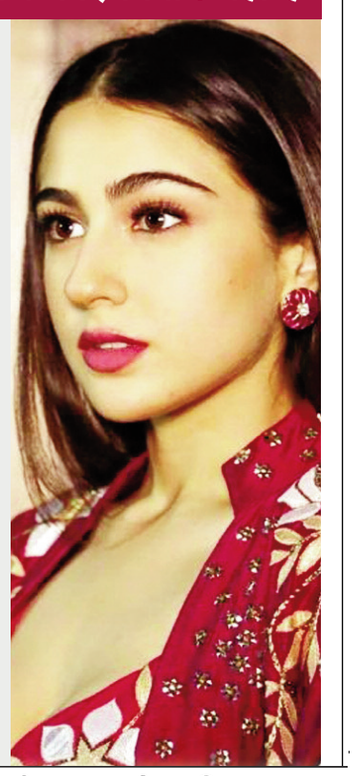

स्वामी मुद्रक व प्रकाशक अनुज कुमार के द्वारा एजीएस पब्लिकेशंस एफ 23, सेक्टर 6, गौतम बुध नगर, उत्तर प्रदेश 201301 से मुद्रित व गांव बुखारीपुर, पोस्ट ढवारसी, तहसील हसनपुर, जनपद अमरोहा, उत्तर प्रदेश पिन कोड 244242 से प्रकाशित।
संपादक-अनुज कुमार, R.N.I. No.-UPHIN/2023/86483, मो0.945688 4327, E-mail-officialsabkasapna@gmail.com, www.sabkasapna.com नोट- समस्त विवादों का न्यायिक क्षेत्र अमरोहा जनपद न्यायालय होगा।